गौमाता राष्ट्रमाता
स्वतःस्फूर्त गौ-प्रतिष्ठा आन्दोलन
Visit : www.1008.guru / Ph. : 7417417414

राष्ट्रीय स्वाभिमान

www.rashtriyaswabhimaan.com

● वर्ष : 18 ● अंक : 118 ● मुंबई, शनिवार, 7 नवम्बर 2026 ● पृष्ठ : 4 ● मूल्य 1 रुपए

एनसीपी के बिखरे कुनबे को फिर जोड़ने की तैयारी? शरद पवार के 10 नवंबर वाले बयान से महाराष्ट्र में हलचल

प्रफुल्ल पटेल से अस्पताल में मुलाकात के बाद बढ़ीं विलय की अटकलें, दिल्ली में अमित शाह से छह वरिष्ठ नेताओं की बैठक ने भी बढ़ाया सियासी कौतूहल

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति में एक बार फिर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के दोनों गुटों के संभावित पुनर्मिलन को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। लंबे समय से अलग-अलग राजनीतिक रास्तों पर चल रहे शरद पवार और अजित पवार गुट के बीच क्या फिर से बातचीत की कोई नई राह खुल रही है? क्या पार्टी के बिखरे हुए कुनबे को एकजुट करने की कोशिश शुरू हो चुकी है? इन सवालों ने राज्य के राजनीतिक गलियारों में नई बहस छेड़ दी है। इसकी सबसे बड़ी वजह राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रफुल्ल पटेल और एनसीपी (शरदचंद्र पवार) के प्रमुख शरद पवार के बीच मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में हुई मुलाकात है। इस मुलाकात के दौरान शरद पवार की ओर से 10 नवंबर के बाद बैठकर बातचीत करने की बात सामने आई। इसके बाद से दोनों गुटों के बीच संभावित सुलह और विलय को लेकर अटकलों का दौर शुरू हो गया है। हालांकि, अभी तक किसी औपचारिक विलय या राजनीतिक समझौते की घोषणा नहीं हुई है, लेकिन हाल के घटनाक्रमों ने महाराष्ट्र की सियासत में नए समीकरण बनने की संभावना को चर्चा के केंद्र में ला दिया है।

दरअसल, शरद पवार इन दिनों मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में उपचार और चिकित्सकीय जांच के लिए भर्ती थे। इसी दौरान 5 नवंबर को अजित पवार गुट के वरिष्ठ नेता और एनसीपी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल उनसे मिलने पहुंचे। सार्वजनिक रूप से इस मुलाकात का उद्देश्य शरद पवार का हालचाल जानना बताया गया, लेकिन दोनों नेताओं के बीच हुई बातचीत का वीडियो सामने आने के बाद राजनीतिक चर्चाओं ने जोर पकड़ लिया। वीडियो में शरद पवार 10 नवंबर के बाद बैठकर चर्चा करने की बात कहते सुनाई दे रहे हैं। जवाब में प्रफुल्ल पटेल भी मुंबई में उपलब्ध रहने और अपनी सुविधा के अनुसार बातचीत के लिए तैयार होने की बात कहते हैं। यही संवाद अब दोनों गुटों के बीच संभावित राजनीतिक बातचीत के संकेत के तौर पर देखा जा रहा है।



मुलाकात के बाद प्रफुल्ल पटेल ने मीडिया से बातचीत में कहा कि शरद पवार से उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक संबंध हमेशा बने रहे हैं। राजनीतिक मतभेद होने के बावजूद आपसी रिश्तों में कड़वाहट नहीं आई है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अस्पताल में मुलाकात का मुख्य उद्देश्य शरद पवार के स्वास्थ्य की जानकारी लेना था। हालांकि, उन्होंने स्वीकार किया कि बातचीत के दौरान देश और महाराष्ट्र की मौजूदा राजनीति का भी सामान्य रूप से जिक्र हुआ। दूसरी ओर, शरद पवार के 10 नवंबर के बाद बैठकर चर्चा करने संबंधी कथन ने इस मुलाकात को सामान्य शिष्टाचार भेंट से आगे की संभावनाओं से जोड़ दिया है। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि प्रस्तावित बातचीत का एजेंडा क्या होगा और उसमें दोनों दलों के संगठनात्मक भविष्य या विलय का मुद्दा शामिल रहेगा या नहीं।

इस घटनाक्रम को और महत्वपूर्ण बना रही है 2 नवंबर को दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ एनसीपी के छह वरिष्ठ नेताओं की हुई मुलाकात। इस बैठक में प्रफुल्ल पटेल के साथ महाराष्ट्र एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष सुनील तटकरे, छगन भुजबल, हसन मुश्रीफ, दिलीप वलसे पाटिल और धनंजय मुंडे शामिल बताए गए। इस मुलाकात में पार्टी के भविष्य, संगठनात्मक स्थिति और राजनीतिक रणनीति से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होने की खबरें सामने आईं। कुछ मीडिया रिपोर्टों में दोनों एनसीपी गुटों के विलय और उसके बाद एनडीए में राजनीतिक भूमिका को लेकर भी बातचीत की बात कही गई है। वहीं, अन्य रिपोर्टों में महाराष्ट्र सरकार में वित्त मंत्रालय का विभाग एनसीपी को वापस दिलाने की मांग को बैठक का प्रमुख मुद्दा बताया गया है। इस तरह बैठक के एजेंडे को लेकर अलग-अलग जानकारियां सामने आई हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की दिल्ली में हुई इस मुलाकात ने राजनीतिक हलकों में नई चर्चा को जन्म दिया।

दिल्ली की बैठक की एक और चर्चा इसलिए हुई क्योंकि इसमें पार्टी की मौजूदा प्रमुख सुनेत्रा पवार और उनके बेटे पार्थ पवार के शामिल होने की जानकारी सामने नहीं आई। इस गैरमौजूदगी को लेकर पार्टी के भीतर नेतृत्व और संगठनात्मक फैसलों में वरिष्ठ नेताओं की भूमिका पर सवाल उठने की खबरें भी प्रकाशित हुईं। कुछ रिपोर्टों में पार्थ पवार की बढ़ती भूमिका को लेकर वरिष्ठ नेताओं की कथित नाराजगी का उल्लेख किया गया है। हालांकि, इन खबरों और चर्चाओं को लेकर सभी संबंधित नेताओं की ओर से एक जैसी या विस्तृत आधिकारिक पुष्टि सामने नहीं आई है। ऐसे में पार्टी के भीतर किसी निश्चित गुटबाजी या टकराव को स्थापित तथ्य मानने के बजाय इसे सामने आ रही राजनीतिक अटकलों के रूप में ही देखा जा रहा है। एनसीपी के दोनों गुटों के बीच संभावित एकता की चर्चा कोई बिल्कुल नई बात नहीं है। वर्ष 2023 में अजित पवार के नेतृत्व में पार्टी के एक बड़े हिस्से ने शरद पवार से अलग राजनीतिक राह अपनाई थी और महाराष्ट्र में भाजपा तथा शिवसेना के साथ सत्ता गठबंधन में शामिल हो गया था। इसके बाद पार्टी दो अलग-अलग गुटों में बंट गई। एक ओर शरद पवार के नेतृत्व में एनसीपी (शरदचंद्र पवार) रही, जबकि दूसरी ओर अजित पवार के नेतृत्व वाला गुट सत्ता पक्ष का हिस्सा बना। इस विभाजन ने महाराष्ट्र की राजनीति के साथ-साथ पार्टी के संगठन, चुनावी पहचान और नेतृत्व के समीकरणों को भी प्रभावित किया। अब अजित पवार के निधन के बाद पार्टी की कमान सुनेत्रा पवार के हाथों में है और ऐसे समय में दोनों गुटों के बीच किसी भी तरह की बातचीत की संभावना को महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

इस बीच महाराष्ट्र एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष सुनील तटकरे के हालिया बयान ने भी विलय की चर्चा को नया आधार दिया है। तटकरे ने सार्वजनिक रूप से कहा कि यदि अजित पवार जीवित होते तो दोनों गुटों के एक साथ आने की संभावना थी। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि पहले दोनों पक्षों के बीच बातचीत हुई थी और 12 फरवरी को विलय की प्रक्रिया को अंतिम रूप दिए जाने की संभावना पर चर्चा थी। उनके इस बयान के बाद यह सवाल उठने लगा कि क्या अजित पवार के रहते दोनों गुटों के बीच सहमति बनाने की कोशिश चल रही थी और क्या अब उनके निधन के बाद वरिष्ठ नेता उस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की संभावना तलाश रहे हैं। हालांकि, तटकरे के बयान को किसी मौजूदा विलय समझौते या अंतिम निर्णय की पुष्टि नहीं माना जा सकता। राजनीतिक चर्चाओं में यह सवाल भी उठ रहा है कि यदि दोनों गुटों के बीच समझौते की दिशा में बातचीत आगे बढ़ती है तो पार्टी का नेतृत्व किसके हाथ में होगा, संगठन में वरिष्ठ नेताओं की भूमिका क्या रहेगी और महाराष्ट्र की सत्ता में उसकी राजनीतिक स्थिति किस तरह तय होगी। केंद्र की राजनीति में एनसीपी की भूमिका और एनडीए के साथ उसके संबंधों को लेकर भी कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। कुछ रिपोर्टों में संभावित सत्ता-साझेदारी और मंत्रालयों को लेकर भी अटकलें व्यक्त की गई हैं, लेकिन इन चर्चाओं की अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

धनतेरस पर 557 परिवारों को मिला अपने घर का तोहफा, फडणवीस-शिंदे ने सौंपीं चाबियां

मुंबई। दीपावली और धनतेरस के शुभ अवसर पर मुंबई के 557 परिवारों का अपने घर का सपना साकार हो गया। वर्षों से पक्के और सुरक्षित आवास की प्रतीक्षा कर रहे इन परिवारों को शुक्रवार को महाराष्ट्र सरकार की ओर से बड़ी सौगात मिली। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और सुनेत्रा पवार की मौजूदगी में 557 लाभार्थी परिवारों को उनके नए घरों की चाबियां सौंपीं। त्योहार के अवसर पर घर की चाबी मिलने से लाभार्थियों के परिवारों में खुशी का माहौल रहा। इस मौके पर सरकार ने मुंबई की आवास संबंधी योजनाओं और पुनर्विकास परियोजनाओं को गति देने की प्रतिबद्धता भी दोहराई। वहीं, एक अन्य कार्यक्रम में मुंबई के 140 सफाई कर्मचारियों को भी घरों की चाबियां सौंपी गईं। इस तरह धनतेरस का दिन सैकड़ों परिवारों के लिए केवल त्योहार का अवसर नहीं, बल्कि नए जीवन की शुरुआत का यादगार दिन बन गया।

मुंबई जैसे महानगर में अपना घर होना लाखों लोगों का सपना है। बढ़ती आबादी, जमीन की सीमित उपलब्धता और आवास की ऊंची कीमतों के कारण मध्यम वर्ग, श्रमिक परिवारों और लंबे समय से पुराने आवासों में रह रहे लोगों के लिए घर खरीदना या नया मकान पाना आसान नहीं होता। ऐसे में सरकारी आवास योजनाओं और पुनर्विकास परियोजनाओं के माध्यम से लोगों को घर उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण माना जाता है। शुक्रवार को 557 परिवारों को चाबियां सौंपे जाने के कार्यक्रम ने इसी दिशा में सरकार की ओर से किए जा रहे प्रयासों को सामने रखा। परिवारों के लिए यह अवसर इसलिए भी खास रहा क्योंकि दीपावली के त्योहार से ठीक पहले उन्हें अपने नए घर में प्रवेश करने का अवसर मिला।



कार्यक्रम के दौरान उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने मुंबई की बहुचर्चित बीडीडी चॉल पुनर्विकास परियोजना को लेकर सरकार का रुख स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि वर्षों से बीडीडी चॉल के निवासी और मुंबईकर यह सवाल पूछते रहे हैं कि क्या इस परियोजना का वास्तव में पुनर्विकास हो पाएगा या यह योजना केवल घोषणाओं तक ही सीमित रह जाएगी। अब लोगों को चिंता करने की जरूरत नहीं है। सरकार इस परियोजना को 100 प्रतिशत निर्धारित समय पर पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि बीडीडी पुनर्विकास परियोजना का काम न तो रोका गया है और न ही इसकी गति धीमी की गई है, बल्कि इसे पूरी तेजी के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है।

शिंदे ने अपने संबोधन में स्पष्ट किया कि बीडीडी चॉल पुनर्विकास सरकार के लिए महत्वपूर्ण परियोजना है और इसे पूरा करने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

प्रदीप पूर्णेकर हत्याकांड की जांच दूसरी एजेंसी को सौंपने से हाई कोर्ट का इनकार

मुंबई। ठाणे में शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) गुट के नेता प्रदीप पूर्णेकर की हत्या के मामले में जांच दूसरी एजेंसी को सौंपने की मांग को लेकर दाखिल याचिका पर बॉम्बे हाई कोर्ट ने तत्काल हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया है। मृतक के परिवार और शिकायतकर्ता मंदार घोडके ने विशेष जांच दल (एसआईटी) की जांच पर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया था कि महत्वपूर्ण सबूतों की अनदेखी की जा रही है और इस हत्याकांड के पीछे कथित राजनीतिक साजिश रचने वालों को बचाने का प्रयास हो रहा है। हालांकि, अदालत ने जांच एजेंसी बदलने की मांग पर तत्काल आदेश देने से इनकार करते हुए कहा कि घटना को अभी केवल 37 दिन हुए हैं और आरोपपत्र दाखिल करने के लिए निर्धारित समय में भी काफी अवधि शेष है। ऐसे में जांच को दूसरी एजेंसी को सौंपने की जल्दबाजी क्यों की जा रही है? अदालत ने याचिका खारिज करते हुए याचिकाकर्ताओं को छुट्टियों के बाद नियमित पीठ के समक्ष अपना मामला रखने की छूट दी है।

मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति अद्वैत सेठना और न्यायमूर्ति रणजीत सिंह भोंसले की पीठ के समक्ष हुई। याचिकाकर्ताओं की ओर से अदालत में दलील दी गई कि एसआईटी जिस तरीके से जांच कर रही है, उससे निष्पक्ष और प्रभावी जांच को लेकर गंभीर संदेह पैदा हो रहे हैं। परिवार का आरोप है कि हत्या से जुड़े कई महत्वपूर्ण पहलुओं और उपलब्ध सबूतों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा है। याचिका में आशंका जताई गई कि यदि जांच इसी तरह जारी रही तो कथित राजनीतिक साजिश में शामिल प्रभावशाली लोगों की भूमिका सामने नहीं आ पाएगी। इसी आधार पर मामले की जांच किसी अन्य स्वतंत्र जांच एजेंसी को सौंपने की मांग की गई थी।

सुनवाई के दौरान अदालत ने याचिकाकर्ताओं की मांग पर सवाल उठाते हुए जांच की समयावधि और अब तक हुई कार्रवाई का उल्लेख किया। पीठ ने कहा कि हत्या की घटना को अभी 37 दिन ही हुए हैं, जबकि आरोपपत्र दाखिल करने के लिए 45 दिन से अधिक का समय बाकी है। ऐसे में जांच को बीच में ही दूसरी एजेंसी को सौंपने की मांग करने के पीछे इतनी जल्दबाजी क्यों है? अदालत की टिप्पणी से स्पष्ट हुआ कि

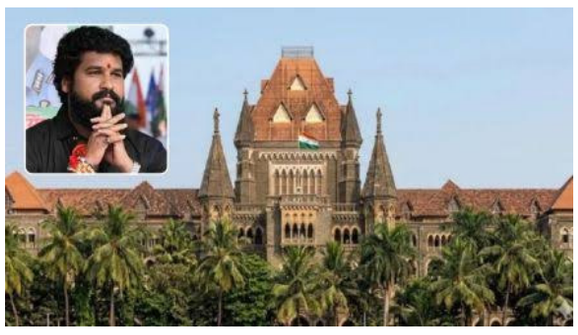

जांच की शुरुआती अवधि में ही एजेंसी बदलने का आदेश देने के लिए पर्याप्त आधार प्रस्तुत करना आवश्यक है। केवल जांच की दिशा या तरीके को लेकर असंतोष के आधार पर तत्काल हस्तक्षेप करना उचित नहीं होगा।

राज्य की ओर से पेश विशेष लोक अभियोजक राजीव चव्हाण ने अदालत को जांच की प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हत्या के मामले में पुलिस ने घटना के 10 दिनों के भीतर ही पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था। इसके अलावा शिकायतकर्ताओं की ओर से जांच एजेंसी को सौंपे गए सबूतों को फॉरेंसिक साइंस लैबोरेटरी (एफएसएल) भेज दिया गया है, जहां उनकी वैज्ञानिक जांच की प्रक्रिया जारी है। अभियोजन पक्ष ने इन तथ्यों के आधार पर अदालत को बताया कि मामले की जांच आगे बढ़ रही है और उपलब्ध सबूतों की पड़ताल की जा रही है।

पीठ ने सुनवाई के दौरान यह भी स्पष्ट किया कि अदालत जांच एजेंसी को उसकी जांच की प्रत्येक प्रक्रिया या तरीके के बारे में निर्देश नहीं दे सकती। जांच किस दिशा में आगे बढ़ेगी, किन सबूतों की पड़ताल की जाएगी और किन लोगों से पूछताछ की जाएगी, यह जांच एजेंसी के अधिकार क्षेत्र का विषय है। हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि जांच पर न्यायिक निगरानी या कानूनी समीक्षा का कोई रास्ता नहीं है, लेकिन इस स्तर पर अदालत ने जांच की प्रक्रिया में तत्काल हस्तक्षेप करने से परहेज किया।

अदालत ने याचिका खारिज करते हुए परिवार और शिकायतकर्ता के लिए आगे का रास्ता भी खुला रखा। पीठ ने उन्हें अदालत की छुट्टियां समाप्त होने के बाद नियमित पीठ के समक्ष अपनी मांग रखने की अनुमति दी। इसका मतलब है कि याचिकाकर्ता छुट्टियों के बाद फिर से अपनी दलीलें प्रस्तुत कर सकते हैं और जांच को लेकर उठाई गई आपत्तियों पर नियमित पीठ से सुनवाई का अनुरोध कर सकते हैं। प्रदीप पूर्णेकर हत्याकांड में परिवार की ओर से उठाए गए सवाल और एसआईटी की ओर से बताई गई जांच की प्रगति अब मामले के महत्वपूर्ण पहलू बन गए हैं। एक तरफ परिवार निष्पक्ष जांच और कथित साजिश में शामिल लोगों की भूमिका सामने लाने की मांग कर रहा है, वहीं अभियोजन पक्ष का कहना है कि पांच आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है और सौंपे गए सबूतों की फॉरेंसिक जांच जारी है। फिलहाल हाई कोर्ट ने जांच दूसरी एजेंसी को सौंपने की मांग पर तत्काल राहत नहीं दी है। अब छुट्टियों के बाद नियमित पीठ के समक्ष होने वाली सुनवाई और एसआईटी की आगे की जांच पर इस मामले में सबकी नजरें रहेंगी।

अंधेरी रेलवे स्टेशन RPF पोस्ट के पाँच जवानों पर घूसखोरी का आरोप,आरोपी हेडक्वार्टर अटैच

मुंबई डिवीजन एसआईबी ने CCTV फुटेज के आधार पर कसा शिकंजा, 20 लाख की कथित माँग और 5 लाख में सौदेबाजी का आरोप

आर एस नेटवर्क। सुजीत मिश्र

मुंबईः पश्चिम रेलवे के मुंबई मंडल अंतर्गत अंधेरी रेलवे स्टेशन RPF पोस्ट में कथित घूसखोरी का एक गंभीर मामला सामने आया है। एक सब-इंस्पेक्टर (SI) सहित पाँच RPF कर्मियों पर गुटखा कारोबारी (बदला हुआ नाम) रविन्द्र यादव, भाईंदर से कथित तौर पर पाँच लाख रुपये की रिश्वत लेने का आरोप है। मामले की गंभीरता को देखते हुए पाँचों आरोपित कर्मियों को चर्चगेट स्थित RPF मुख्यालय से अटैच किए जाने की जानकारी सामने आई है।

आरोपित कर्मियों में SI ललित त्रिपाठी, हेड कांस्टेबल ओम प्रकाश गुर्जर तथा कांस्टेबल मोनू, शिवरत्न और कृष्ण कुमार गुर्जर के नाम शामिल हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, 27 अक्टूबर 2026 को RPF कर्मियों ने कथित तौर पर गुटखा कारोबारी रविन्द्र यादव को गुटखे के साथ पकड़ा था। आरोप है कि पकड़े गए गुटखे को पहले किसी स्थान पर छिपाया गया और इसके बाद कारोबारी को अंधेरी RPF पोस्ट लाया गया। इस पूरी गतिविधि से संबंधित CCTV



फुटेज मुंबई मंडल की SIB के पास सुरक्षित होने की बात कही जा रही है।

आरोप है कि RPF पोस्ट में कारोबारी से कथित तौर पर 20 लाख रुपये की माँग की गई और अंततः पाँच लाख रुपये में मामला निपटाने की बात तय हुई। दावा किया जा रहा है कि कारोबारी जब कथित रकम लेकर अंधेरी स्टेशन पहुँचा तब उसके हाथ में नोटों की गड्डियाँ स्टेशन के CCTV कैमरों में दिखाई दीं। इसके बाद वह रकम लेकर RPF पोस्ट की ओर गया। उसने जान बूझकर नोटों की गड्डियों को स्टेशन परिसर के सीसीटीवी में प्रदर्शित किया

उपलब्ध बताए जा रहे CCTV फुटेज में दिखाई देने वाली रकम की वास्तविक मात्रा और कथित पाँच लाख रुपये के भुगतान की पुष्टि स्वतंत्र जाँच से ही हो सकेगी।

सूत्रों के मुताबिक, मामला RPF के वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुँचने के बाद पूरे प्रकरण की जाँच के निर्देश दिए गए। मुंबई मंडल की SIB ने स्टेशन और RPF पोस्ट के CCTV फुटेज सहित संबंधित साक्ष्य वरिष्ठ अधिकारियों को उपलब्ध कराए हैं। प्रारंभिक स्तर पर पाँचों आरोपित कर्मियों को मुख्यालय अटैच किए जाने की जानकारी मिली है। हालांकि इस कार्रवाई को अंतिम दोषसिद्धि नहीं माना जा सकता।

इस प्रकरण में एक और गंभीर दावा सामने आया है। सूत्रों का कहना है कि शिकायत सामने आने के बाद आरोपित कर्मियों और शिकायतकर्ता के बीच कथित तौर पर 15 लाख रुपये में समझौता हुआ। इसके तहत शिकायतकर्ता द्वारा अपनी शिकायत वापस लेने की बात कही जा रही है। हालांकि इस कथित लेन-देन और समझौते की स्वतंत्र पुष्टि होना अभी बाकी है।

एक RPF कर्मी ने नाम प्रकाशित न करने की शर्त पर दावा किया कि अंधेरी RPF पोस्ट के कई स्थानों पर लगे CCTV कैमरे या तो काम नहीं कर रहे हैं अथवा उनके कैमरे का कवरेज संबंधित क्षेत्रों तक नहीं है। यदि यह दावा सही है तो यह रेलवे की सुरक्षा और निगरानी व्यवस्था पर भी गंभीर सवाल खड़े करता है।

इस पूरे प्रकरण में सबसे अहम सवाल यह है कि यदि SIB के पास CCTV फुटेज और अन्य साक्ष्य मौजूद हैं तो जाँच को तार्किक निष्कर्ष तक पहुँचाने में देरी क्यों होनी चाहिए? शिकायतकर्ता ने कथित तौर पर शिकायत वापस क्यों ली? क्या इस मामले में किसी प्रभावशाली व्यक्ति का संरक्षण भी शामिल है?

अब निगाहें RPF के वरिष्ठ अधिकारियों की जाँच पर टिकी हैं। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि जाँच केवल पाँच कर्मियों तक सीमित रहती है या कथित संरक्षण देने वाले अन्य जिम्मेदार लोगों की भूमिका भी सामने लाई जाती है।

महाराष्ट्र के 87.45 लाख किसानों की दिवाली हुई खुशहाल, खातों में पहुंचे 4,372 करोड़ रुपये

मुंबई। महाराष्ट्र में सूखे की मार झेल रहे लाखों किसानों के लिए इस बार दीपावली आर्थिक राहत की खुशखबरी लेकर आई है। राज्य सरकार की ओर से सूखाग्रस्त 304 तहसीलों के पात्र किसानों को दिवाली से पहले पांच-पांच हजार रुपये की अग्रिम सहायता देने की घोषणा के बाद बड़े पैमाने पर राशि का वितरण किया गया है। 5 नवंबर 2026 तक राज्य के 87 लाख 45 हजार 669 किसानों के बैंक खातों में कुल 4,372 करोड़ 83 लाख रुपये जमा किए जा चुके हैं। इस सहायता से किसानों को त्योहार के दौरान आर्थिक जरूरतें पूरी करने में सहारा मिला है। वहीं, जिन पात्र किसानों के खातों में अभी तक रकम नहीं पहुंची है, उनके लिए भी सरकार ने राहत का भरोसा दिया है। राहत एवं पुनर्वास मंत्री मकरंद जाधव पाटील ने स्पष्ट किया है कि कोई भी पात्र किसान इस योजना के लाभ से वंचित नहीं रहेगा और तकनीकी अड़चनें दूर होते ही शेष किसानों के खातों में भी सहायता राशि पहुंचा दी जाएगी।

दरअसल, महाराष्ट्र के कई हिस्सों में सूखे की गंभीर स्थिति के कारण किसानों को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। खेती पर निर्भर परिवारों के सामने फसल और आमदनी से जुड़ी चुनौतियों के साथ रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने का दबाव भी बढ़ा है। ऐसे में दीपावली के अवसर पर किसानों को तत्काल आर्थिक संबल देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने पात्र किसानों को पांच-पांच हजार रुपये की अग्रिम सहायता देने की घोषणा की थी। सरकार की इस घोषणा के बाद राजस्व, राहत एवं पुनर्वास तथा कृषि विभाग ने संयुक्त रूप से सहायता वितरण की प्रक्रिया शुरू की। प्रशासन को निर्देश दिए गए कि पात्र लाभार्थियों की पहचान कर उनके बैंक खातों में सीधे राशि जमा कराई जाए, ताकि सहायता बिना किसी अनावश्यक देरी के किसानों तक पहुंच सके।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 5 नवंबर तक कुल 87,45,669 किसानों को सहायता उपलब्ध कराई जा चुकी थी। इन लाभार्थियों के खातों में 4,372 करोड़ 83 लाख रुपये जमा हुए हैं। विभागवार वितरण में छत्रपति संभाजीनगर विभाग सबसे आगे रहा, जहां 33 लाख 36 हजार 360 किसानों को 1,668 करोड़ 18 लाख रुपये की सहायता दी गई। इसके बाद नासिक विभाग में 18 लाख 7 हजार 32 किसानों के खातों में 903 करोड़ 52 लाख रुपये जमा किए गए। पुणे विभाग के 15 लाख 6 हजार 386 किसानों को 753 करोड़ 19 लाख रुपये की सहायता मिली। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि राज्य के बड़े कृषि क्षेत्रों में लाखों परिवारों तक सरकारी सहायता पहुंचाने का काम किया गया है।

अमरावती विभाग में भी सहायता वितरण बड़े स्तर पर हुआ है। यहां 12 लाख 82 हजार 203 किसानों के बैंक खातों में कुल 641 करोड़ 10 लाख रुपये जमा किए गए। नागपुर विभाग के 7 लाख 50 हजार 41 किसानों को 375 करोड़ 2 लाख रुपये की आर्थिक मदद दी गई। वहीं, कोंकण विभाग में 63 हजार 647 किसानों के खातों में 31 करोड़ 82 लाख रुपये पहुंचाए गए। सरकार की ओर से जारी आंकड़ों में अलग-अलग विभागों के साथ जिलावार लाभार्थियों की संख्या भी सामने आई है, जिससे यह पता चलता है कि सहायता योजना का दायरा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों तक रखा गया है।

अमरावती विभाग के तहत अकोला में 1 लाख 62 हजार, अमरावती में 3 लाख 6 हजार, बुलढाणा में 4 लाख 25 हजार, वाशिम में 1 लाख 59 हजार और यवतमाल में 2 लाख 28 हजार किसानों को सहायता मिली है। छत्रपति संभाजीनगर विभाग में बीड के 6 लाख 12 हजार, छत्रपति संभाजीनगर के 4 लाख 44 हजार, धाराशिव के 3 लाख 47 हजार, हिंगोली के 2 लाख 12 हजार, जालना के 4 लाख 38 हजार, लातूर के 3 लाख 81 हजार, नांदेड़ के 5 लाख 62 हजार और परभणी के 3 लाख 36 हजार किसानों के खातों में राशि जमा की गई है। इस विभाग में सबसे अधिक किसानों तक सहायता पहुंचने के पीछे सूखा प्रभावित क्षेत्रों का बड़ा दायरा प्रमुख वजह माना जा रहा है।

कोंकण विभाग में पालघर के 8,213, रायगढ़ के 2,218, रत्नागिरी के 22,494 और सिंधुदुर्ग के 30,722 किसानों को सहायता दी गई है। नागपुर विभाग के तहत भंडारा में 1 लाख 158, चंद्रपुर में 2 लाख 629, गढ़चिरौली में 30,788, गोंदिया में 74,910, नागपुर में 1 लाख 92 हजार और वर्धा में 1 लाख 50 हजार किसानों के खातों में राशि पहुंची है। इस क्षेत्र में भी अलग-अलग जिलों के किसानों को योजना के तहत शामिल किया गया है।

रविन्द्र गिन्नौरै

जन-जन की देवी महालक्ष्मी

मातृपूजा का विधान वैदिक युग से पूर्व आदिम जनों में भी प्रचलित था जो शक्ति पूजा में मातृदेवी को पूजते थे। पृथ्वी जननी है और पोषक भी है। आदिम मानव की भांति सनातनी प्रकृति पूजक रहे। सृष्टि चक्र को चलाने वाली प्रकृति को हिन्दुओं ने ज्यों का त्यों अपनी धार्मिक परम्परा में समाहित कर लिया। कहा गया है, 'दयौः पिता पृथ्वी माता' के अनुसार नारी के रूप में माँ को पूजनीय माना। इसलिए ही सभ्यता के विकास में मानव ने नारी के विभिन्न रूपों में 'शक्ति' मानकर पूजा।

मोहन-जो-दाड़ो और हड़प्पा की खुदाई के दौरान मृण्य मूर्तियां मिली, जिन्हें मातृका देवी कहा गया है। प्रस्तर और नवीन प्रस्तर युग के बाद कांस्य युग में मातृदेवी उपासना के प्रमाण मिलते हैं। आदिवासियों व जनजातियों में ममता (माता) और दक्षिण भारत की शाक्त पूजा में काफी समन्वय है। भारत ही नहीं विदेशों में जहाँ प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं, वहाँ मातृ उपासना के चिन्ह प्राप्त हुए हैं।

एशिया सहित ग्रीस, यूरोप में मातृपूजा की परम्परा मिलती है। इश्तार के समश्रेणी बेबीलोन की 'नीथओ देवी' स्काटलैंड में 'फइललिक' मिश्र की 'आइसिस हैधर' और 'सेखेय हैथर' जापान की 'चनेष्टी' तिब्बत की 'ला-मो', ग्रीक की 'दिमितार' देवी हैं, जिन्हें शक्ति स्वरूपा माना जाता है। विश्व की अधिसंख्य जनजातियों जनदेवी (धरनी) सीता (अन्न) को विभिन्न नामों से मातृदेवी के रूप में पूजते हैं। विभिन्न आख्यानों में मातृदेवी को आदि शक्ति कहा गया है।

वैदिक युग में देवी सूक्त और रात्रि सूक्त में शक्ति पूजा की परम्परा प्रारंभ हुई। ऋग्वेद के श्री सूक्त में लक्ष्मी को प्रजापति की पुत्री कहा गया है। यहाँ देवी की यथोगाथा कर आरोग्य, समृद्धि, सम्पत्ति, आयु, पुत्र-परिवार, धन-धान्य की प्रार्थना कर कहा गया है-

ऱ्यस्थरिण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।ऱ

ऋग्वेद में देवी लक्ष्मी के 44 स्वरूपों के नाम श्री सूक्त में दिए हैं, जिनमें हिरण्यवर्णा, हरिणी, सुवर्ण रजतस्जा, चन्द्रा, हिरण्यमयी, लक्ष्मी, अनपगामिनी, अनुपूर्वा, रधमध्या, हस्तिनाद, प्रमोदनी, श्री, देवी, सोस्मिता, हिरण्यप्रकाश, आर्द्रा, ज्वलंती, तर्पयंती, पद्मेस्थिता, पद्मावर्णा, प्रभाला, देवजुष्श, उदारा, पद्मिनी, ई, आदित्यवर्णा, तपसोऽधिजाता, गंधद्वारा, दुरावर्षा, नित्यपुष्टा, करीषिणी, सर्व-भूतानां, ईश्वरी, माता, पुष्करिणी दुष्टि पिंगला पद्मनालिनी, यः करिणी, सुवर्णा, हेमामालिनी और सूर्या कह वंदना की गई है।

यजुर्वेद में ब्रह्मा की तीन शक्तियां सरस्वती, लक्ष्मी और महाकाली के रूप में त्रिपुरीकृत किया जो सत, रज और तमोगुण की अधिष्ठात्री देवियाँ हैं। सामवेद के रात्रिसूक्त में शक्ति उपासना की ऋचाएँ हैं। जहाँ देवी स्वयं कहती हैं-

ऱ्मैं स्वयं समग्र जगत की ईश्वरी शक्ति है। मैं ही धनदात्री है। मैं ही एकमात्र उपास्य है। उपास्य तत्वों में मैं ही श्रेष्ठ हूँ और सम्पूर्ण जगत में स्थापित हूं। मुझे सर्वरूप में देख रहे हो पर पहचान नहीं पा रहे हो। तुम मुझे भूल गए हो, इसलिए संसार चक्र पतित होकर यातना भोग रहा है।ऱ अथर्ववेद में लक्ष्मी को दो स्वरूपों में कह पूजा गया है। कहा गया है-

'प्र पतेतः पापि लक्ष्मि नश्चेत प्रायुतः पता' अर्थात् हे पाप लक्ष्मी तू यहाँ से हट जा, ऐसा कहकर संवृत देव से प्रार्थना की गई है और कहा है,

या मा लक्ष्मीः पतयालूर् अजुष्टा
अभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम् ।
अन्यत्रास्मत् सवितस् ताम् इतो धा
हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः ॥

ब्रह्मवैवर्त पुराण में लक्ष्मी के आठ अवतार कहे गए हैं। बैकुण्ठ में महालक्ष्मी, स्वर्ग में स्वर्गलक्ष्मी, गोलोक में राधा, पाताल व भूलोक में राजलक्ष्मी, गृह में गृहलक्ष्मी, गोधाम में सुरभि, चन्द्र में शोभा और यज्ञ में दक्षिणा स्वरूप में लक्ष्मी हैं। लिंग पुराण में समुद्र मंथन का आख्यान है, जिसमें अलक्ष्मी के बाद लक्ष्मी अवतरित हुई। पद्मपुराण में लक्ष्मी को भृगु की ख्याति पुत्री कहा गया है, जिनका सम्बन्ध कुबेर से बताया गया है। मार्कण्डेय पुराण में लक्ष्मी को दत्तात्रेय की धर्मपत्नी कहा गया है, जिसमें इन्हें पद्मिनी नाम से विद्या की देवी निरूपि किया गया। विष्णु पुराण में विष्णु पत्नी लक्ष्मी कहा गया जो ऐरावत द्वारा लाए गए सुवर्ण यात्रा के तीर्थ जल से स्नान करती सदा भगवान् विष्णु के हृदय स्थल पर विराजमान रहती हैं। यहाँ लक्ष्मी विष्णु की आत्मा और शक्ति हैं और जगत जननी भी। श्रीमद् भागवत पुराण अष्टम स्कंध के अनुसार देवासुर संग्राम के पूर्व समुद्र मंथन से भगवती के बल समान उनकी प्रभा से जगमगाती हुई दैदीप्यमान होने लगी। देवी भागवत उप पुराण के अनुसार लक्ष्मी का जन्म भगवान श्रीकृष्ण के वामांग से हुआ। श्रीकृष्ण की पत्नी रुकमणी को लक्ष्मी का अवतार कहा गया है। वराह पुराण, वामन पुराण, वायु पुराण में भी लक्ष्मी की कथाओं मिलती हैं। पौराणिक ग्रंथों में लक्ष्मी को मूल रूप से श्री और समृद्धि की देवी कहा गया है।

जैनों में आम्र देवी, अंबिका देवी को पूजा जाता है। जैन साहित्य में लक्ष्मी देवी के स्वरूप की चर्चा मिलती है, जब भगवान महावीर स्वामी ने एक ऐसी देवी को स्वप्न में देखा जो जल के बीच कमल पर बैठी हैं और उन्हें हाथी स्नान करवा रहे हैं। बौद्ध और जैन धर्मों का विकलित रूप गुप्तकाल में उभरकर आया। दोनों धर्मों में अहिंसा को प्रमुख माना, जिन्होंने हिन्दू धर्म, संस्कृति के अहिंसात्मक प्रतीकों को अपने में समाहित किया। बौद्ध युग में कला व स्थापथ्य को अत्यधिक महत्व दिया। यही सांस्कृतिक धरोहर हमें अनेक स्थानों में मिलती है, जिसमें देवियों को भी उत्कीर्ण किया गया है।

'मारीचि देवी' दस भुजावाली महिषासुर मर्दिनी देवी का प्रतीक बौद्धों की आराध्य हैं। 'महावास्तु' में कहा गया है कि जब भगवान बुद्ध अपनी माता के साथ कपिल वस्तु आये थे, तब उन्होंने 'अभया देवी' की चरण वंदना की थी। स्वामी जगदीशवरानंद का मत है कि अभया देवी और कोई नहीं वे दुर्गा देवी हैं।

चीनी बौद्ध ग्रंथों में लक्ष्मी को कुबेर की मुख्य पार्षद, मणिभद्र की पुत्री कहा गया है। चीन के केण्टन शहर के बौद्ध मंदिर में शतभुजा देवी की मूर्ति है। जापान की एक बौद्ध कथा में लक्ष्मी को 'हारिति' की पुत्री कहा गया है। धम्मपद अष्ठ कथा में लक्ष्मी को पूर्व दिशा के दिशा रक्षक तरह की पुत्री माना है।

तिब्बत के लामा मारीचि देवी को उथा देवी के रूप में आह्वान कर पूजते हैं। शक्ति, धन-धान्य की देवी की पूजा जिन धर्म, संप्रदायों में हुई है, उनमें देवी का ही मूल स्वरूप उभरकर सामने आता है।

अवतारवाद की प्रतिष्ठा जब भारत में हुई तो महालक्ष्मी को कई नामों, स्वरूपों में पूजा गया। शक्ति को आदि अनंत माना गया है जो नारी स्वरूपा हैं। हर युग में अपने अंशवतारों से विभिन्न नामों से अवतरित देवी की उपासना हुई। भगवान विष्णु के दस अवतारों में महालक्ष्मी विभिन्न नामों से अवतरित हो उनकी पाली बनीं। रामवतार में जनक पुत्री सीता बन उनकी अर्धांगिनी हुई। कृष्णावतार में रूखमणी, वामनावतार में कमलोभ्दया लक्ष्मी, परशुराम अवतार में धरती (भूमि) अदित्यावतार में पद्मा विशेष रूप से पूजित हैं। भारत के प्राचीन ग्रंथों में लक्ष्मी अवतार की अनेक कथाएँ हैं।

तंत्र साहित्य में मातृ शक्ति परम शक्ति है। मातृका देवी परम तेज युक्त हैं जो सम्पूर्ण ब्रह्म सहित भुवनात्मक विश्व में व्याप्त हैं। वह तरनि तरण करने वाली और कार्य करने वाली स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्मतर है। शिव सूत्र में अष्ट मातृकाओं को पशु माता नाम दिया गया है, वर्गादि में मातेश्वरी पशु माता हैं, इनके अलग-अलग अधिष्ठित देव हैं। महालक्ष्मी का बीज मंत्र 'हनी' है, जिन्हें इच्छाशक्ति की देवी कहा गया है।

योगदर्शन में महर्षि पातंजलि ने कहा है कि मंत्र जाप, अर्थ चिन्तन होना चाहिए। श्रीश महालक्ष्मी, र-धन ई- पुटिना-विश्वमाता विन्दु-दुखनाश कर धन और तुष्टि, पुष्टि की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी मेरे दुख को दूर को, यह ही लक्ष्मी श्री बीज है।

कृषि प्रधान देश भारत में फसल देने वाली धरती, उपजने वाले अन्न को पूजा। देश की सभी जनजातियों ने माता, मयना, मामाता के नाम से पूजा जो उनकी लोकोक्तियों व लोकगीतों में मुखर होती हैं। मिथिला की लोक संस्कृति में पूजित कृषि देवी का नाम सीता है, जहाँ फसल (हराई) की देवी सीता है। अभ के दाने को सीता कहने का अभिप्राय यहीं है।

सृष्टि चक्र को चलाने वाली आदि शक्ति, अन्न उपजाकर हमारा भरण-पोषण करने वाली और हमें ऐश्वर्य प्रदान करने वाली शक्ति ही प्रकृति को नियंत्रित करती है। यही आदि शक्ति हमारे लिए पूजनीय है, जिसे हम अनेक नामों से पुकारते हैं और अपने सम्पूर्ण विश्व का कल्याण करने की प्रार्थना करते हैं, उनकी पूजा करते हैं। इन्हीं पर्वों में दीपपर्व प्रमुख है। हम दीप ज्योति प्रज्ज्वलित कर शक्ति की आराधना कर अपनी समृद्धि के लिए आराधना करते हैं।

बाल कविता

दीपों की मुस्कान

घर-घर अब दिये जलेंगे,
रौनक छाने वाली है।
रोशन होंगी सारी गलियाँ,
दीवाली आने वाली है।
इस दिन आए राम लौटकर,
दुष्ट रावण संहारा था।
सत्य की जीत असत्य पर,
सबने यह स्वीकारा था।
लट्टू घूमे, जले फुलझड़ी,
अनार भी छूटे भारी है।
गुड़िया नाचे, बच्चे हँसते,
खुशियों की छाई क्यारी है।
माँ ने बनाए मीठे पकवान,
घर में खुशबू आने वाली है।
रोशन होंगी सारी गलियाँ,
दीवाली आने वाली है।

सर्दी की बढ़ी रफ्तार



डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी

ठंडी-ठंडी चली हवा,
कंपकंप काँपे डार।
देखो भैय्या ! बढ़ गई फिर,
सर्दी की बढ़ी रफ्तार।
ऊपर-ऊपर धूप खड़ी है,
पर देती नहीं प्यार।
छोटा-सा सूरज भी लगता,
जैसे हो गया बीमार।
नानी बोली, स्वेटर पहनो,
टोपी भी कर लो तैयार।
मैंने कहा, गरम चाय दो,
फिर छू लूँ मैं हर दीवार।
कुत्ते-बिल्ली गोल-गोल हो,
धूप में लेते आराम।
चिड़िया बोली, ठिठुर न जाना,
मत करना तुम कोई काम।
हँसते-खेलते हम बच्चों की,
फिर भी नहीं थमी पुकार।
आओ-आओ खेलें बाहर,
मजेदार सर्दी की रफ्तार।

विरासत के शब्द- 25

आओ फिर से दिया जलाएँ

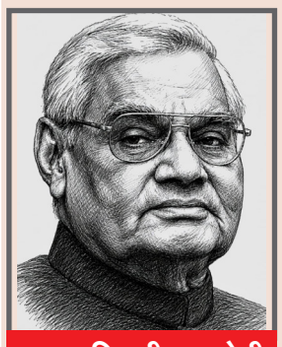

अटल बिहारी वाजपेयी

भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाईं से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें,
बुझी हुई बाती सुलगाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ
हम पड़ाव को समझे मंज़िल
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वतर्मान के मोहजाल में
आने वाला कल न भुलाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ
आहुति बाक़ी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने
नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ

और मांगें मान ली गईं



अशोक मिश्र

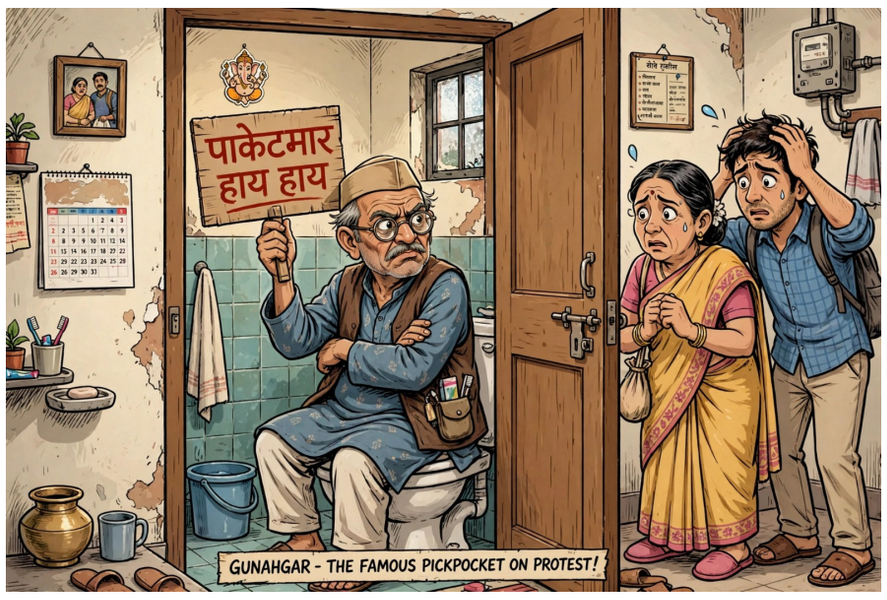

मेरे उस्ताद हैं गुनाहगार। विख्यात जेबतराश। कोई कितना सतर्क रहे,
गुनाहगार की अंगुलियां अपना कमाल दिखा ही जाती थीं। जब से लोगों ने डेबिट और क्रेडिट कार्ड रखना शुरू किया है, तब से उनका धंधा थोड़ा मंदा पड़ गया है। पिछले कुछ दिनों से उनके साथ गजब यह हुआ कि कोई उनका ही जेब तराशने लगा। सौ-पांच सौ रुपये आए दिन जेब से गायब होने लगे। उन्हें पक्का विश्वास था कि कोई परिवारघाती ही उनकी जेब की लंका लगा रहा है। उन्होंने घर के सभी सदस्यों से दरियाफ्त किया। डराया धमकाया। कोई गुनाह कबूल करने
को तैयार नहीं। हैरान-परेशान गुनाहगार ने अपनी समस्या मुझे बताई तो मैंने उन्हें जेन जेड हो जाने की सलाह दी। फिर क्या था! वह घर पहुंचे और पाकेटमार हाय हाय! लिखा प्लेकार्ड तैयार किया। घर के आंगन में धरने पर बैठ गए। पत्नी और बच्चों ने आपत्ति की। पत्नी ने पुलिसिया लहजे में गुर्राते हुए कहा, आपको शरम नहीं आती है, बुढ़ापे में विरोध प्रदर्शन
करते। वह भी अपने ही घर में। गुनाहगार ने कहा, जब तुम लोगों को घर में पाकेट मारते शरम नहीं आई, तो
मुझे क्यों आए? पत्नी ने सरकारी रवैया अख्तियार करते हुए कहा, आपको प्रदर्शन ही करना है, तो कहीं और जाइए। आप आंगन में विरोध प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं। गुनाहगार उठकर बरामदे में बैठ गए। बेटे ने बरामदे में बैठने पर आपत्ति जताई। कहा, पापा! बरामदे में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 168 लागू है। यहां क्या, आप घर में कहीं विरोध प्रदर्शन नहीं कर सकते। गुनाहगार भड़क उठे, यह मेरा घर है। मैंने अपने खून पसीने की कमाई
से इसे बनवाया है। तुम लोग मुझसे मेरा अधिकार नहीं छीन सकते। मेरी जहां मरजी होगी, मैं वहां बैठकर विरोध जताऊंगा।
यह सुनते ही गुनाहगार की पत्नी तमतमाती हुई आईं और बोलीं, ज्यादा
चपड़-चपड़ मत करो। बहुमत इधर है। लोकतंत्र में जिसका बहुमत, सरकार उसकी। बाकी सब विरोधी। विरोधी को कुचल देना, लोकतंत्र का धर्म है। आपने जैसे ही बहुमत के खिलाफ प्रदर्शन करने का मन बनाया, उसी पल से आपको परिवार रूपी सदन से निलंबित कर दिया गया। आप यहां भी प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं। आप
कहीं और जाकर प्रदर्शन करें। यह सुनकर गुनाहगार ने थोड़ी देर विचार किया। उसके बाद वह झटके से उठे। उस दिन के अखबार और प्लेकार्ड समेटा और लापता हो गए। ढाई-तीन घंटे बाद जब बेटे को लघुशंका की जरूरत महसूस हुई, असल हंगामा तब हुआ। दरवाजा अंदर से बंद। अंदर गुनाहगार प्लेकार्ड लिए,
पाकेटमार..हाय हाय! का नारा लगा रहे थे। किसी भी तरह दरवाजा खोलने को राजी नहीं। समस्या जब विकट होने लगी, तो पत्नी ने वार्ता की कमान अपने हाथ में लिया। उन्होंने कहा, यह क्या बचपना है? यह भी कोई विरोध प्रदर्शन की जगह है? दरवाजा खोलिए और बाहर आइए। गुनाहगार मानने को तैयार नहीं। बोले, यही एक जगह है, जहां कोई धारा लागू नहीं हो सकती है। अब मैं कम से कम बारह घंटे तक प्रदर्शन करूंगा। अब पूरा परिवार सरकार की तरह समझौते के
लिए गिड़गिड़ाने लगा। अंदर और बाहर से ही कई दौर की वार्ता हुई। बाद में तय हुआ कि जिसने जितने पैसे निकाले हैं, वह वापस करेगा। भविष्य में पाकेटमारी का खानदानी दांव परिवार में नहीं आजमाया जाएगा। चार घंटे बाद गुनाहगार निकले, तब तक सबके कस बल ढीले पड़ चुके थे।

सुबह होने वाली



डॉ. प्रेम शंकर द्विवेदी 'भास्कर'

निशा जा रही है
सुबह होने वाली
छाने लगी है
अम्बर पर लाली ।
सुखद है धरा
फूटने पौ चली है
योगी यती को ये
लगती भली है ।
मंदिर से घंटो की
ध्वनि आ रही है
निशा जा चुकी है
उषा आ रही है ।
मधुर स्वर में विहग
गीत गाने लगे हैं
चूजों की पक्षी
चुगाने लगे हैं।।
झरनों की शोभा
अजब लग रही है
सुखद ध्वनि कलकल
गजब लग रही है।
खिली फिर कुमुदती
भ्रमर गुनगुनाये
सुखद है प्रकृति
गीत मधुकर ने गाये ।।
हंसे फूल मंजुल
सुहानी धरा है
गमकती दिशाओं में
मद सा भरा है।।

दीपों की रोशनी ने बदल दी जिंदगी, छोटी-सी खुशियों में छिपा है दीपावली का असली संदेश

दीपावली का त्योहार आते ही चारों ओर उत्साह और उमंग का वातावरण बन जाता है। बाजार रंग-बिरंगी रोशनी से सज जाते हैं, घरों में साफ-सफाई और सजावट शुरू हो जाती है, मिठाइयों की खुशबू वातावरण में घुलने लगती है और हर तरफ दीपों की जगमगाहट दिखाई देने लगती है। बच्चे नए कपड़ों और पटाखों को लेकर उत्साहित रहते हैं, तो बड़े परिवार के साथ मिलकर त्योहार मनाने की तैयारियों में जुट जाते हैं। लेकिन क्या दीपावली का अर्थ केवल घरों को रोशन करना, मिठाइयां बांटना और आतिशबाजी करना ही है? वास्तव में दीपावली हमें जीवन का एक ऐसा संदेश देती है, जिसकी रोशनी यदि हमारे विचारों और व्यवहार में उतर जाए तो समाज से अंधकार, निराशा और नफरत को काफी हद तक दूर किया जा सकता है।

कहते हैं कि जहां प्रकाश होता है, वहां अंधकार अपने आप समाप्त हो जाता है। दीपावली भी इसी विचार का प्रतीक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान श्रीराम चौदह वर्षों का वनवास पूरा कर और रावण पर विजय प्राप्त कर जब अयोध्या लौटे थे, तब नगरवासियों ने उनके स्वागत में दीप जलाए थे। पूरा अयोध्या नगर दीपों की रोशनी से जगमगा उठा था। यह केवल एक राजा के लौटने का उत्सव नहीं था, बल्कि सत्य, धर्म, मर्यादा और न्याय की अधर्म पर विजय का प्रतीक था। तभी से दीपावली को बुराई पर अच्छाई और अंधकार पर प्रकाश की जीत के पर्व के रूप में मनाया जाता है। इसी पर्व से जुड़ी एक छोटी-सी प्रेरणादायक कहानी हमें दीपावली का वास्तविक अर्थ समझाती है। एक छोटे से गांव में रामदीन नाम का एक गरीब व्यक्ति अपने परिवार के साथ रहता था। वह मेहनत-मजदूरी करके अपने बच्चों का पालन-पोषण करता था। हर वर्ष दीपावली पर वह अपने घर के बाहर मिट्टी के कुछ दीपक जलाता और बच्चों को थोड़ी-सी मिठाई लाकर देता था। उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, लेकिन वह हमेशा अपने बच्चों को सिखाता था कि त्योहार की खुशी पैसों से नहीं, बल्कि परिवार के प्यार और आपसी सहयोग से मिलती है। एक वर्ष दीपावली से कुछ दिन पहले रामदीन की मजदूरी बंद हो गई। घर में पहले से ही राशन की कमी थी। बच्चों ने जब बाजार में सजे खिलौने और मिठाइयां देखीं तो उन्होंने भी अपने पिता से नए कपड़े और पटाखे लाने की इच्छा जताई। रामदीन बच्चों की बातें सुनकर मुस्कराया, लेकिन भीतर ही भीतर परेशान हो गया। उसके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह बच्चों की सभी इच्छाएं पूरी कर सके। दीपावली की शाम आई। गांव के लगभग सभी घर रोशनी से जगमगा रहे थे। कहीं रंगोली बनाई जा रही थी तो कहीं पूजा की तैयारियां चल रही थीं। रामदीन के घर में केवल चार मिट्टी के दीपक थे। उसकी पत्नी ने घर के बाहर उन दीपकों को रख दिया। बच्चों के चेहरे पर उदासी थी। तभी रामदीन ने देखा कि पड़ोस में रहने वाली एक बुजुर्ग महिला अपने घर के बाहर अकेली बैठी थी। उनके परिवार के सदस्य शहर में रहते थे और त्योहार पर भी कोई उनके पास नहीं आया था। रामदीन ने अपने बच्चों से कहा कि हमारे पास भले ही मिठाइयां और पटाखे कम हैं, लेकिन हमारे पास किसी के चेहरे पर मुस्कान लाने का अवसर जरूर है। वह बच्चों को साथ लेकर उस बुजुर्ग महिला के घर पहुंचा। उसकी पत्नी ने अपने घर में बनाई थोड़ी-सी मिठाई उन्हें दी और बच्चों ने उनके साथ बैठकर दीपावली मनाई। काफी समय बाद उस महिला के चेहरे पर मुस्कान दिखाई दी। उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद दिया और रामदीन के परिवार को अपने पास बैठाकर प्यार से भोजन कराया।

इसके बाद रामदीन ने गांव के कुछ अन्य गरीब परिवारों को भी अपने घर बुलाया। किसी ने थोड़ी मिठाई दी, किसी ने भोजन बनाया तो किसी ने मिट्टी के दीपक बांटे। देखते ही देखते कई परिवार एक-दूसरे की खुशियों में शामिल हो गए। उस रात गांव के लोगों ने महसूस किया कि दीपावली की सबसे सुंदर रोशनी बिजली के बल्बों या महंगे सजावटी सामान में नहीं, बल्कि इंसान के दिल में जलने वाले प्रेम और संवेदना के दीप में होती है। अगले दिन गांव के लोगों ने निर्णय लिया कि प्रत्येक वर्ष दीपावली पर वे जरूरतमंद परिवारों की सहायता करेंगे। किसी गरीब बच्चे को कपड़े दिए जाएंगे, किसी बुजुर्ग को भोजन कराया जाएगा और किसी जरूरतमंद परिवार के घर में भी दीप जलाए जाएंगे।

मालिक जयेश जग्शी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित कर महाराष्ट्र ग्रेन स्टोर्स, 28, डॉ. भगवानदास इंद्रजीत रोड, वालकेश्वर, मलबार हिल, मुंबई-400006 से प्रकाशित किया।
संपादकः **अश्विनी कुमार दुबे** (पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी है, न्याय क्षेत्र मुंबई), सहसंपादकः सुजीत मिश्रा (दै.'राष्ट्रीय स्वाभिमान 'में सभी लोग सहयोगात्मक और अवैतनिक तौर पर कार्यरत हैं)
● आर.एन.आई.:MAHHIN/2008/24084 ● ईमेलः rastriyaswabhiman@gmail.com ● भ्रमणध्वनि क्र. +919224733113

महाराष्ट्र के सभी सफाई कर्मचारियों को मालिकाना हक के घर देगी सरकार: फडणवीस

मुंबई। महाराष्ट्र में सफाई कर्मचारियों को सम्मानजनक जीवन और सुरक्षित भविष्य देने की दिशा में राज्य सरकार ने बड़ी पहल की है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घोषणा की है कि राज्य के सभी सफाई कर्मचारियों को मालिकाना हक के साथ आवास उपलब्ध कराए जाएंगे। सरकार का उद्देश्य वर्षों से कठिन परिस्थितियों में काम कर रहे सफाई कर्मचारियों और उनके परिवारों को बेहतर आवासीय सुविधाएं देना है, ताकि उन्हें अस्थायी या सीमित सुविधाओं वाले सरकारी सेवा आवासों पर निर्भर न रहना पड़े। मुख्यमंत्री ने वर्ष 2028 तक सफाई कर्मचारियों को सेवा निवास उपलब्ध कराने का लक्ष्य भी निर्धारित किया है। इस दिशा में मुंबई के दक्षिणी हिस्से कोलाबा स्थित पंचशील नगर में आश्रय योजना के तहत नवनिर्मित 140 आवासों का उद्घाटन और चाबी वितरण इस महत्वाकांक्षी योजना की महत्वपूर्ण शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है। पंचशील नगर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि सफाई कर्मचारी शहरों को स्वच्छ और व्यवस्थित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके श्रम और योगदान के कारण ही महानगरों में नागरिक जीवन सुचारु रूप से चल पाता है। ऐसे कर्मचारियों को बेहतर आवास और सम्मानजनक जीवन उपलब्ध कराना सरकार की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सफाई कर्मचारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए योजनाबद्ध तरीके से आवास उपलब्ध कराने का काम कर रही है। इसके लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर श्रमसाफल्य योजना और वाल्मीकि आवास योजना के माध्यम से प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार की मंशा है कि सफाई कर्मचारियों को केवल रहने के लिए मकान ही नहीं, बल्कि ऐसा घर मिले जिस पर उनका मालिकाना अधिकार भी हो।

मुख्यमंत्री ने बताया कि सफाई कर्मचारियों के आवास निर्माण के लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) ने पहली बार प्री-फैब्रिकेटेड तकनीक



के माध्यम से इन आवासों का निर्माण किया है। इस तकनीक के इस्तेमाल से निर्माण कार्य को व्यवस्थित और अपेक्षाकृत कम समय में पूरा करने में मदद मिलती है। पंचशील नगर में तैयार किए गए 140 घर इसी पहल का हिस्सा हैं। सरकार का प्रयास है कि आने वाले समय में अन्य कर्मचारी बस्तियों में भी इसी तरह योजनाबद्ध तरीके से आवासीय सुविधाओं का विस्तार किया जाए।

कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बताया कि बीएमसी के लगभग 29 हजार सफाई कर्मचारियों को आवास उपलब्ध कराने की योजना का पहला चरण शुरू हो चुका है। इसके तहत मुंबई में स्थित 146 कर्मचारी बस्तियों का चरणबद्ध तरीके से पुनर्विकास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि लंबे समय से सफाई कर्मचारी सीमित आकार के आवासों में रहने को मजबूर थे। अब उन्हें पहले उपलब्ध कराए जाने वाले 150 वर्गफुट के मकानों की जगह 300 वर्गफुट के घर देने की व्यवस्था की जा रही है। इससे कर्मचारियों और उनके परिवारों को पहले की तुलना में अधिक रहने की जगह मिलेगी और उनकी जीवनशैली में सुधार आएगा।

बीएमसी की आश्रय योजना के तहत मुंबई की 30 कर्मचारी बस्तियों का 35 परियोजनाओं के माध्यम से पुनर्विकास किया जा रहा है। इस योजना में कुल 12,144 आवास तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है। इनमें 300 वर्गफुट क्षेत्रफल वाले 11,371 घर और 600 वर्गफुट क्षेत्रफल वाले 773 घर शामिल हैं। इस प्रकार अलग-अलग जरूरतों और आवासीय व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए योजना तैयार की गई है। कर्मचारी बस्तियों के पुनर्विकास से न केवल पुराने और सीमित सुविधाओं वाले मकानों की जगह बेहतर आवास मिलेंगे, बल्कि इन क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं का भी विस्तार किया जा सकेगा।

विधानसभा अध्यक्ष एडवोकेट राहुल नार्वेकर ने कहा कि मुंबई के लगभग 29 हजार सफाई कर्मचारियों को घर उपलब्ध कराने का जो सपना देखा गया था, उसकी शुरुआत पंचशील नगर के 140 आवासों से हुई है। उन्होंने इसे सफाई कर्मचारियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने वाला महत्वपूर्ण कदम बताया। नवनिर्मित इमारतों में लिफ्ट सहित अन्य आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं, ताकि कर्मचारियों और उनके परिवारों को रोजमर्रा के जीवन में सुविधा मिल सके। आवासीय परियोजनाओं में बुनियादी सुविधाओं का ध्यान रखने से कर्मचारियों को बेहतर वातावरण में रहने का अवसर मिलेगा।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और अन्य अतिथियों ने पांच सफाई कर्मचारियों को प्रतिनिधिक रूप से नए घरों की चाबियां सौंपीं। इसके साथ ही पंचशील नगर में तैयार 140 आवासों का लोकार्पण किया गया। चाबी मिलने के बाद कर्मचारियों के परिवारों के लिए लंबे समय से बेहतर आवास की प्रतीक्षा पूरी होने की उम्मीद जगी है। सरकार की इस पहल को सफाई कर्मचारियों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर, मुंबई की महापौर रितु तावड़े, उपमहापौर संजय घाड़ी, बीएमसी आयुक्त अश्विनी भिड़े सहित कई जनप्रतिनिधि, अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में आवास योजना के क्रियान्वयन और कर्मचारी बस्तियों के पुनर्विकास से जुड़े विषयों पर भी चर्चा हुई।

धनतेरस पर उल्हासनगर की 101 छात्राओं को मिली आर्थिक सहायता, 'लाडकी विद्यार्थिनी योजना' का शुभारंभ

उल्हासनगर। धनतेरस के शुभ अवसर पर उल्हासनगर की बेटियों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए आर्थिक संबल देने की दिशा में महानगरपालिका ने महत्वपूर्ण पहल की है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की छात्राओं को पढ़ाई जारी रखने और शिक्षा के माध्यम से अपना भविष्य संवारने में मदद करने के उद्देश्य से 'ज्योति कलानी लाडकी विद्यार्थिनी योजना' का शुभारंभ किया गया। शुक्रवार को आयोजित कार्यक्रम में योजना के तहत शहर की 101 छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान की गई। सांसद डॉ. श्रीकांत शिंदे की संकल्पना से शुरू की गई इस योजना के माध्यम से कक्षा 7वीं से 12वीं तक पढ़ने वाली पात्र छात्राओं को प्रतिमाह 500 रुपये दिए जाएंगे। इस तरह प्रत्येक लाभार्थी छात्रा को सालाना 6,000 रुपये की सहायता मिलेगी। महानगरपालिका का अनुमान है कि इस योजना से शहर की करीब 19,700 छात्राएं लाभान्वित होंगी। धनतेरस के अवसर पर शुरू हुई इस पहल को बेटियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने और जरूरतमंद परिवारों पर पढ़ाई का आर्थिक बोझ कम करने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है।

योजना के शुभारंभ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में छात्राओं को सहायता राशि प्रदान की गई। इस दौरान जनप्रतिनिधियों ने कहा कि शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार है और आर्थिक स्थिति के कारण किसी भी बेटी की पढ़ाई प्रभावित नहीं होनी चाहिए। कई परिवारों में सीमित आय के चलते बच्चों की शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करना चुनौती बन जाता है। विशेष रूप से माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर पढ़ाई के दौरान किताबें, शैक्षणिक सामग्री, आवागमन और अन्य जरूरी खर्च परिवारों पर अतिरिक्त आर्थिक दबाव डालते हैं। ऐसे में नियमित आर्थिक सहायता मिलने से छात्राओं को अपनी पढ़ाई जारी रखने में मदद मिल सकती है।

'ज्योति कलानी लाडकी विद्यार्थिनी योजना' के तहत कक्षा 7वीं से 12वीं तक अध्ययनरत पात्र छात्राओं को हर महीने 500 रुपये की आर्थिक सहायता देने का प्रावधान किया गया है। इसके अनुसार एक छात्रा को एक वर्ष में कुल 6,000 रुपये मिलेंगे।

काशी में कल से होंगे स्वर्णमयी मां अन्नपूर्णा के दर्शन, पांच दिनों तक बंटेगा अद्भुत खजाना

धनतेरस पर सुबह 5 बजे खुलेंगे मंदिर के कपाट, सीपी और डीएम ने सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

वाराणसी। दीपावली और धनतेरस के पावन पर्व पर धर्मनगरी काशी में भक्ति और उत्साह का माहौल है। धनतेरस के अवसर पर सिद्धपीठ अन्नपूर्णा मठ मंदिर में जगतजननी मां अन्नपूर्णा के अलौकिक स्वर्णमयी स्वरूप का दर्शन होगा। साथ ही श्रद्धालुओं के बीच परंपरागत रूप से खजाने का वितरण किया जाएगा। धनतेरस पर सुबह पांच बजे मंदिर के कपाट खुलेंगे। अगले पांच दिनों तक श्रद्धालु मां अन्नपूर्णा की स्वर्णमयी प्रतिमा और रजत महादेव के दर्शन कर सकेंगे।

मां के इस दुर्लभ दर्शन के लिए



श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह है। गुरुवार शाम से ही भक्त मंदिर के बाहर कतारबद्ध होकर अपनी बारी का इंतजार करने लगे।

सीपी और डीएम ने परखी सुरक्षा व्यवस्था

श्रद्धालुओं की संभावित भारी भीड़ को देखते हुए गुरुवार को पुलिस कमिश्नर मोहित अग्रवाल और जिलाधिकारी ने बाबा काशी विश्वनाथ धाम तथा मां अन्नपूर्णा मंदिर का स्थलीय निरीक्षण किया। अधिकारियों ने मंदिर परिसर और आसपास के क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था, श्रद्धालुओं के सुचारु आवागमन, बैरिकेडिंग और भीड़ नियंत्रण की तैयारियों का जायजा लिया।

पुलिस कमिश्नर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि पर्व के दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रखे जाएं। श्रद्धालुओं को दर्शन के दौरान किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा भीड़ प्रबंधन और आवागमन की व्यवस्था सुचारु बनी रहे। प्रशासन ने पर्व को देखते हुए सुरक्षा एवं भीड़ नियंत्रण के व्यापक इंतजाम किए हैं।

जर्मनी से प्राथमिक विद्यालय चांदपुर के बच्चों के लिए आया दीपावली उपहार

सहायक अध्यापक कल्पना तिवारी के मित्र अमित भदौरिया ने वितरित की स्वच्छता किट और दीप

वाराणसी। दीपावली के पावन पर्व पर प्राथमिक विद्यालय चांदपुर, चिरईगांव के बच्चों को जर्मनी से विशेष उपहार मिला। विद्यालय की सहायक अध्यापक कल्पना तिवारी के मित्र एवं जर्मनी निवासी अमित भदौरिया ने बच्चों के लिए स्वच्छता किट और दीप भिजवाए। इस अवसर पर बच्चों को दीपावली की शुभकामनाएं भी दी गईं।

स्वच्छता किट वितरण का मुख्य उद्देश्य बच्चों में व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाना और अच्छी आदतों का विकास करना है, ताकि वे स्वयं के साथ-साथ अपने आसपास के



वातावरण को भी स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित हों।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी चिरईगांव राम पूजन पटेल रहे। इस अवसर पर एआरपी रश्मि त्रिपाठी, मनीष कुशवाहा, सीमा द्विवेदी, अमृता गुप्ता, माधुरी गुप्ता, किरण बाला एवं आबा तिवारी की विशेष उपस्थिति रही।

विद्यालय परिवार ने इस सराहनीय पहल के लिए अमित भदौरिया के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे प्रयास बच्चों में स्वच्छता, सामाजिक जागरूकता और त्योहारों के प्रति उत्साह की भावना विकसित करते हैं।

ग्राम कचहरियों में 94 प्रतिशत मामलों का निष्पादन सराहनीय : किरण देव यादव

चाणक्य लॉ यूनिवर्सिटी में सरपंच एवं सचिवों की संयुक्त कार्यशाला आयोजित, उत्कृष्ट कार्य करने वालों को मिलेगा सम्मान

खगड़िया। चाणक्य लॉ यूनिवर्सिटी के सभागार में सरपंच एवं ग्राम कचहरी सचिवों की संयुक्त कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें ग्राम कचहरियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन और न्यायिक व्यवस्था को मजबूत बनाने पर चर्चा हुई।

पंच-सरपंच संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष सह जिलाध्यक्ष किरण देव यादव ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में ग्राम कचहरियों द्वारा 94 प्रतिशत मामलों का निष्पादन किए जाने पर सरपंचों एवं सचिवों को बधाई दी। उन्होंने बताया कि बिहार की 8,053 ग्राम कचहरियों में कुल 2,39,986 मामले आए, जिनमें 1,09,118 आपराधिक तथा 1,30,868 दीवानी मामले शामिल थे। इनमें से 2,25,393 मामलों का सफलतापूर्वक



निष्पादन किया गया। उन्होंने कहा कि सीमित संसाधनों और सुविधाओं के बावजूद ग्राम कचहरियों का यह प्रदर्शन सराहनीय है।

उन्होंने बताया कि बेहतर कार्य करने वाले सरपंचों एवं सचिवों को कार्यशाला में शामिल करने के लिए बिहार के सभी जिलों से दो-दो प्रतिनिधियों को नामित किया गया। कार्यशाला में पंचायती राज विभाग के प्रतिनिधियों, चाणक्य लॉ यूनिवर्सिटी के कुलसचिव एवं चेयरपर्सन प्रो. डॉ. एसपी सिंह, परामर्शी रघुवंश सिंह, यूनिसेफ के बांके बिहारी तथा पंच-सरपंच संघ के प्रदेश अध्यक्ष अमोद निराला ने उत्कृष्ट योगदान देने वाले सरपंचों एवं ग्राम कचहरियों के नाम घोषित किए। चयनित सरपंचों एवं सचिवों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।

किरण देव यादव ने कहा कि जहां न्यायालयों में एक करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं, वहीं ग्राम कचहरियां सीमित संसाधनों के बावजूद 94 प्रतिशत मामलों का निष्पादन कर रही हैं। इससे पहले भी ग्राम कचहरियों ने 88 प्रतिशत मामलों का निष्पादन किया था। यदि ग्राम कचहरियों को पर्याप्त संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं तो न्यायालयों पर बढ़ते मुकदमों के बोझ को काफी हद तक कम किया जा सकता है। उन्होंने सरकार से पंच-सरपंचों को सम्मान, सुरक्षा, उचित वेतन, बीमा, भत्ता एवं पेंशन देने, पंचायती राज आयोग का गठन करने तथा एमएलसी चुनाव में मतदाता बनने की व्यवस्था और भत्ते में वृद्धि करने की मांग की। उन्होंने कहा कि इन मांगों को पूरा करने से महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के सपने को साकार करने में ग्राम कचहरियां ऐतिहासिक भूमिका निभा सकेंगी।

कार्यशाला में खगड़िया जिले से लगभग 200 सरपंच एवं ग्राम कचहरी सचिवों ने भाग लिया। चाणक्य लॉ यूनिवर्सिटी के कुलसचिव एवं चेयरपर्सन प्रो. डॉ. एसपी सिंह ने ग्राम कचहरियों के सरपंचों एवं सचिवों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि ग्राम कचहरी व्यवस्था को और अधिक सशक्त बनाने के लिए उसे सभी आवश्यक सुविधाओं से संपन्न करना जरूरी है।

'ईजीएन कनेक्टएक्स 2026' को मिला शानदार प्रतिसाद, 10 हजार से अधिक प्रतिनिधि हुए शामिल

मुंबई। ईजीएन इंडिया द्वारा मुंबई के नेस्को बॉम्बे एक्जिबिशन सेंटर में 3 और 4 नवंबर को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षणिक प्रदर्शनी एवं सम्मेलन 'ईजीएन कनेक्टएक्स 2026' सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसमें 10,000 से अधिक प्रतिनिधियों और 125 से अधिक कंपनियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में शिक्षा, एडटेक, कौशल विकास और शैक्षणिक तकनीक से जुड़े नए समाधानों का प्रदर्शन किया गया। सम्मेलन में एआई, डिजिटल शिक्षा और रोजगारपरक कौशल जैसे विषयों पर चर्चा हुई। वहीं, 1,500 शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की गईं तथा उत्कृष्ट शैक्षणिक संस्थानों और शिक्षा क्षेत्र के नेतृत्वकर्ताओं



को सम्मानित किया गया।

ईजीएन इंडिया की उपाध्यक्ष एवं सीईओ डॉली सिंह ने कहा कि सम्मेलन में शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों की उत्साहपूर्ण भागीदारी भारतीय शिक्षा क्षेत्र में नवाचार और आधुनिक तकनीक के बढ़ते महत्व को दर्शाती है।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में भगवान धन्वंतरि का विधिवत पूजन-अर्चन

आर एस नेटवर्क। डॉ. उदय शंकर भगत

वाराणसी। धनतेरस के पावन अवसर पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केंद्रम् में आयुर्वेद के आराध्य देव भगवान धन्वंतरि का विधि-विधानपूर्वक पूजन-अर्चन किया गया। इस अवसर पर छात्र कल्याण संकाय प्रमुख प्रो. शैलेश कुमार मिश्र ने वैदिक एवं पारंपरिक विधि से भगवान धन्वंतरि की आराधना कर विश्वविद्यालय परिवार सहित समस्त विश्व के उत्तम स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि एवं निरोगी जीवन की मंगलकामना की।

प्रो. मिश्र ने कहा कि भगवान धन्वंतरि भारतीय आयुर्वेद परंपरा के प्रवर्तक एवं आराध्य देव हैं। धनतेरस का पर्व हमें स्वास्थ्य को जीवन की सबसे बड़ी संपदा मानने और निरोगी जीवन के प्रति



जागरूक रहने का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद और योग भारतीय ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं। स्वस्थ जीवन के लिए योग, संतुलित आहार, संयम और प्राकृतिक जीवनशैली अपनाना आवश्यक है।

उन्होंने भारतीय संस्कृति के सूत्र 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्, आतुरस्य विकार प्रशमनम्' का उल्लेख करते हुए कहा कि स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत विषय नहीं, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र की समृद्धि का आधार है। भगवान धन्वंतरि की आराधना हमें आरोग्य, सेवा, करुणा और लोककल्याण की भावना से जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यों ने श्रद्धापूर्वक सहभागिता करते हुए सभी के स्वस्थ एवं सुखी जीवन की कामना की। पूजन-अर्चन पुजारी डॉ. राजकुमार मिश्र ने संपन्न कराया। इस अवसर पर सुनील कुमार, प्रदीप कुमार पाण्डेय, संजय कुमार तिवारी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

धारावी STP का 76 प्रतिशत निर्माण पूरा, मई 2027 तक काम खत्म करने का लक्ष्य

मुंबई। मुंबई की मीठी नदी को प्रदूषण से मुक्त करने और शहर के सीवेज प्रबंधन को आधुनिक बनाने की दिशा में बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) की धारावी सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STP) परियोजना तेजी से आगे बढ़ रही है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना का अब तक 76 प्रतिशत भौतिक निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। 418 मिलियन लीटर प्रतिदिन (MLD) क्षमता वाला यह प्लांट शुरू होने के बाद धारावी और आसपास के क्षेत्रों से निकलने वाले सीवेज के वैज्ञानिक उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे मीठी नदी में सीधे गिरने वाले गंदे पानी की मात्रा कम होगी और नदी के जल प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी। बीएमसी ने मई 2027 तक प्लांट का निर्माण पूरा करने और जुलाई 2027 तक इसे पूरी तरह कार्यान्वित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। परियोजना की एक खास विशेषता यह भी है कि सीवेज उपचार के दौरान निकलने वाली बायोगैस का उपयोग बिजली



उत्पादन के लिए किया जाएगा, जिससे ऊर्जा की बचत के साथ पर्यावरण अनुकूल व्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

मुंबई सीवरेज परियोजना के तहत बन रहे इस प्लांट की प्रगति का जायजा लेने के लिए बीएमसी के अतिरिक्त महानगरपालिका आयुक्त (परियोजना) अभिजीत बांगर ने निर्माण स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों और संबंधित एजेंसियों के साथ विभिन्न निर्माण कार्यों की समीक्षा की और शेष काम को निर्धारित समयसीमा में पूरा करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सीवेज ट्रीटमेंट टैंक, इनलेट और आउटलेट व्यवस्था, पंप हाउस, स्लज ट्रीटमेंट यूनिट, आंतरिक पाइपलाइन तथा यांत्रिक एवं विद्युत उपकरणों की स्थापना की स्थिति देखी। उन्होंने स्पष्ट किया कि परियोजना में तेजी लाने के साथ निर्माण की गुणवत्ता और श्रमिकों की सुरक्षा से किसी तरह का समझौता नहीं होना चाहिए।

धारावी जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्र में जमीन की उपलब्धता सीमित होने के कारण इस परियोजना का डिजाइन सामान्य सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट से अलग तैयार किया गया है। यहां उपलब्ध सीमित जगह का अधिकतम उपयोग करने के लिए प्लांट को विशेष डिजाइन वाली बहुमंजिला इमारत के रूप में विकसित किया जा रहा है। परियोजना का निर्माण 5 जुलाई 2022 को शुरू हुआ था। इतने बड़े स्तर के संयंत्र को सीमित क्षेत्र में स्थापित करना इंजीनियरिंग की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसमें विभिन्न उपचार इकाइयों, मशीनरी, पाइपलाइन और संचालन संबंधी व्यवस्थाओं को एकीकृत तरीके से तैयार किया जा रहा है, ताकि कम जगह में अधिक क्षमता के साथ सीवेज का उपचार किया जा सके।

इस परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बापट नाला और सफेद पुल से मीठी नदी में सीधे मिलने वाले सीवेज को रोकना है। इसके लिए डबल टनल के माध्यम से गंदे पानी को एकत्रित कर उपचार संयंत्र तक पहुंचाने की व्यवस्था बनाई जा रही है। वर्तमान में इन स्थानों से प्रतिदिन लगभग 168 MLD सीवेज सीधे नदी में पहुंचता है। नई व्यवस्था के जरिए इस पानी को नदी में गिरने से पहले ट्रीटमेंट प्लांट तक लाया जाएगा। इससे मीठी नदी में प्रदूषण का दबाव कम करने और उसके जल की गुणवत्ता सुधारने में मदद मिलेगी। मुंबई में नदी और नालों के प्रदूषण का एक बड़ा कारण बिना उपचारित सीवेज का जलस्रोतों में मिलना है। ऐसे में इस परियोजना को शहर की पर्यावरणीय व्यवस्था सुधारने के प्रयासों से जोड़कर देखा जा रहा है।

प्लांट में सीवेज उपचार के लिए आधुनिक सिक्वेंशियल बैच रिएक्टर (SBR) तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। इस तकनीक के माध्यम से प्रतिदिन 418 MLD सीवेज का द्वितीयक उपचार किया जा सकेगा, जबकि इसमें से 209 MLD पानी का तृतीयक उपचार करने की क्षमता विकसित की जा रही है। इसके अलावा स्लज ट्रीटमेंट की श्रेणी 'ए' स्तर तक की सुविधा भी उपलब्ध होगी। आधुनिक उपचार प्रणाली से गंदे पानी में मौजूद प्रदूषक तत्वों को निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार कम करने में मदद मिलेगी। इससे उपचारित पानी की गुणवत्ता बेहतर होगी और सीवेज के निस्तारण की व्यवस्था अधिक प्रभावी बन सकेगी। परियोजना की एक अन्य विशेषता सीवेज उपचार के दौरान निकलने वाली बायोगैस का उपयोग है। स्लज के उपचार की प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाली बायोगैस से बिजली बनाई जाएगी। इससे संयंत्र की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में सहायता मिलेगी और पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम करने का अवसर मिलेगा।

हिन्दी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहार:रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रावाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001, भ्र.ध्व. क्र.:9224733113
ईमेल:rastriyaswabhimaan@gmail com

04 मुंबई, शनिवार, 7 नवम्बर 2026 महाराष्ट्र
epaper.rashtriyaswabhimaan.in
www.rashtriyaswabhimaan.com

दिसंबर से शुरु हो सकती है ठाणे भिवंडी मेट्रो सेवा : कपिल पाटिल

भिवंडी। भिवंडीकरों का ठाणे तक मेट्रो से सफर करने का इंतजार जल्द खत्म हो सकता है। ठाणे-भिवंडी मेट्रो परियोजना का काम दिसंबर तक पूरा होने की उम्मीद है और इसी महीने मेट्रो सेवा शुरू होने की संभावना है। यह जानकारी पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री कपिल पाटिल ने शुक्रवार को मेट्रो परियोजना के निरीक्षण के दौरान दी। उन्होंने कहा कि भिवंडी मेट्रो परियोजना का पूरा श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को जाता है। वह परियोजना के श्रेय को लेकर किसी तरह की राजनीति नहीं करना चाहते।

मेट्रो ट्रेन का परीक्षण पूरा होने के



बाद शुक्रवार को कपिल पाटिल ने धामणकर नाका, अंजूरफाटा और काल्हेर स्थित मेट्रो स्टेशनों का निरीक्षण किया। इस दौरान मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) के अधिकारियों ने काल्हेर स्टेशन पर परियोजना का प्रस्तुतिकरण कर निर्माण कार्य की मौजूदा स्थिति की जानकारी दी।

निरीक्षण के दौरान अंजूरफाटा स्टेशन पर लिफ्ट और एस्केलेटर लगाने के लिए आवश्यक जगह उपलब्ध कराने में आ रही बाधाओं का मुद्दा भी सामने आया। संबंधित जमीन के अधिग्रहण को लेकर कपिल पाटिल ने जमीन मालिक से फोन पर बातचीत कर परियोजना के लिए सहयोग करने की अपील की। उन्होंने भरोसा जताया कि जमीन अधिग्रहण से जुड़ी समस्याओं का जल्द समाधान हो जाएगा।कपिल पाटिल ने कहा कि भिवंडी के लिए मेट्रो अब जरूरत बन चुकी है। दिसंबर में सेवा शुरू होने से लाखों नागरिकों का सफर तेज और सुविधाजनक होगा। इससे शहर में यातायात जाम की समस्या कम होने के साथ औद्योगिक विकास को भी गति मिलेगी। उन्होंने बताया कि वर्ष 2016 में उन्होंने भिवंडी की यातायात समस्या को देखते हुए ठाणे से भिवंडी होते हुए कल्याण तक मेट्रो सेवा शुरू करने की मांग की थी। तत्कालीन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। वर्ष 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने परियोजना का भूमिपूजन किया था।

श्रेय की राजनीति से बचने की दी नसीहत

मेट्रो परियोजना के श्रेय को लेकर पाटिल ने कहा कि भिवंडी मेट्रो का श्रेय मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को जाता है और भिवंडीकर उनके योगदान को कभी नहीं भूलेंगे। महायुति के नेताओं और कार्यकर्ताओं को एक-दूसरे के योगदान का सम्मान करना चाहिए। यदि कोई परियोजना का श्रेय लेता है तो उसे उन लोगों के प्रयासों का भी उल्लेख करना चाहिए, जिन्होंने इसके लिए काम किया है।उन्होंने कहा कि ठाणे-भिवंडी-कल्याण मेट्रो परियोजना के लिए उन्होंने लगातार प्रयास किए हैं।

सीएसएमटी स्टेशन पर अवैध फेरीवालों का डेरा, आरपीएफ की कार्यप्रणाली पर उठे सवाल



मुंबई। छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) रेलवे स्टेशन पर अवैध फेरीवालों का कारोबार लगातार जारी है। शुक्रवार शाम प्लेटफार्म नंबर-2 पर राहुल गुप्ता नामक एक फेरीवाले को कथित तौर पर बिना पहचान पत्र के अवैध रूप से फेरी लगाते हुए पकड़ा गया। समाजसेवक शिवकुमार गुप्ता द्वारा पकड़े गए फेरीवाले को आरपीएफ थाने में जमा करवाया गया।

इस घटना ने सीएसएमटी जैसे महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशन पर अवैध फेरीवालों की सक्रियता और सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। आखिर बिना पहचान पत्र के फेरीवाले रेलवे प्लेटफार्म तक कैसे पहुंच रहे हैं? क्या ये लोग आरपीएफ की नजरों से बचकर कारोबार कर रहे हैं या फिर संबंधित अधिकारियों की कथित अनदेखी के कारण इनका धंधा

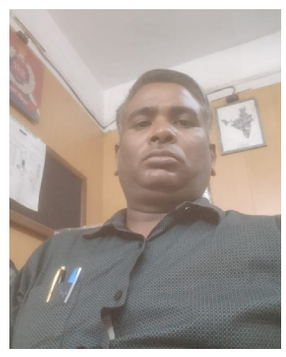

फल-फूल रहा है?

रेलवे प्रशासन और आरपीएफ को इस मामले की गंभीरता से जांच कर अवैध फेरीवालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। साथ ही यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि स्टेशन परिसर में इस तरह के अवैध कारोबार पर प्रभावी रोक लगाने की जिम्मेदारी निभाई जा रही है या नहीं।

भिवंडी में घर की पार्किंग से 30 हजार की मोटरसाइकिल चोरी

भिवंडी। भिवंडी के शांतिनगर इलाके में घर की पार्किंग में खड़ी एक मोटरसाइकिल चोरी होने का मामला सामने आया है। अज्ञात चोर ने रात के समय वारदात को अंजाम देकर करीब 30 हजार रुपये कीमत की मोटरसाइकिल चुरा ली। पुलिस के अनुसार, शिकायतकर्ता मोहम्मद अजान नरुल ऐन शेख (35) ने अपनी मोटरसाइकिल क्रमांक एमएच-48-बीक्यू-3254 को पावर हाउस के पास स्थित अपने घर की बिल्डिंग के नीचे पार्क किया था। 2 नवंबर की रात करीब 11 बजे अज्ञात चोर ने मोटरसाइकिल पर हाथ साफ कर दिया। काफी तलाश करने के बाद भी बाइक नहीं मिलने पर उन्होंने 5 नवंबर को पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। शांतिनगर पुलिस अज्ञात आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच कर रही है।

पश्चिम रेलवे ने 2,023 पेंशनभोगियों के डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट किए जमा

मुंबई। पेंशनभोगियों को जीवन प्रमाणपत्र जमा कराने की प्रक्रिया आसान, सुविधाजनक और तकनीक आधारित बनाने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे की ओर से चलाए जा रहे डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट (डीएलसी) अभियान 5.0 के तहत अब तक 2,023 पेंशनभोगियों के डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र जमा किए जा चुके हैं। 6 नवंबर 2026 तक हासिल हुई इस उपलब्धि के साथ पश्चिम रेलवे ने अपने छह मंडलों और पांच कारखानों में अभियान को गति दी है। इसके तहत विभिन्न स्थानों पर विशेष शिविर आयोजित कर पेंशनभोगियों को डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बनवाने और जमा कराने में सहायता दी जा रही है। खासतौर पर वरिष्ठ नागरिकों को ध्यान में रखते हुए यह व्यवस्था की गई है, ताकि उन्हें जीवन प्रमाणपत्र जमा करने के लिए अनावश्यक भागदौड़ न करनी पड़े और बैंक या रेलवे कार्यालयों के चक्कर लगाने की परेशानी से राहत मिल सके।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी विनीत अभिषेक के अनुसार, डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट अभियान 5.0 के अंतर्गत रेलवे के विभिन्न विभागों और इकाइयों के कर्मचारी पेंशनभोगियों को आवश्यक सहायता उपलब्ध करा रहे हैं। अभियान का उद्देश्य पारंपरिक तरीके से जीवन प्रमाणपत्र जमा कराने की प्रक्रिया को डिजिटल माध्यम से सरल बनाना और अधिक से अधिक पेंशनभोगियों तक इस सुविधा का लाभ पहुंचाना है। इसके लिए रेलवे प्रशासन की ओर से विभिन्न शहरों



और रेलवे परिसरों में विशेष शिविर लगाए जा रहे हैं, जहां पेंशनभोगियों को डिजिटल प्रमाणपत्र तैयार करने और उसे जमा कराने की प्रक्रिया समझाई जा रही है।

इसी कड़ी में सहायक वित्त सलाहकार (वर्क्स एवं स्टोर्स), लोअर परेल के कार्यालय की ओर से 5 नवंबर को वलसाड के धरमपुर रोड स्थित भारतीय स्टेट बैंक की शाखा में विशेष शिविर आयोजित किया गया। शिविर में रेलवे कर्मचारियों ने पेंशनभोगियों को डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट जमा कराने में मदद की। साथ ही उन्हें इस सुविधा की उपयोगिता, प्रक्रिया और अभियान से मिलने वाले लाभों के बारे में जानकारी दी गई। शिविर का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि पेंशनभोगियों को प्रमाणपत्र जमा कराने के दौरान तकनीकी या प्रक्रियागत कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।

पश्चिम रेलवे की ओर से यह अभियान केवल एक स्थान तक सीमित नहीं रखा गया है। चर्चगेट स्थित मुख्यालय, विरार स्टेशन और वडोदरा मंडल सहित विभिन्न स्थानों पर भी विशेष शिविर आयोजित किए गए हैं। इसके अलावा भावनगर परा और दाहोद स्थित रेलवे कारखानों में भी अभियान के तहत पेंशनभोगियों को सहायता उपलब्ध कराई गई। छह मंडलों और पांच कारखानों के समन्वित प्रयासों से डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र जमा कराने का काम लगातार आगे बढ़ाया जा रहा है। डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट की सुविधा विशेष रूप से उन वरिष्ठ पेंशनभोगियों के लिए उपयोगी है, जिन्हें उम्र या अन्य कारणों से बैंक अथवा संबंधित कार्यालय तक पहुंचने में कठिनाई होती है। जीवन प्रमाणपत्र पेंशन जारी रखने के लिए आवश्यक दस्तावेज होता है। पहले इसे जमा कराने के लिए पेंशनभोगियों को निर्धारित कार्यालय या बैंक शाखा में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होना पड़ता था। डिजिटल व्यवस्था ने इस प्रक्रिया को अधिक सुविधाजनक बनाया है। अब निर्धारित डिजिटल माध्यम से पहचान सत्यापन कर जीवन प्रमाणपत्र तैयार किया जा सकता है, जिससे समय और मेहनत दोनों की बचत होती है।

पश्चिम रेलवे का प्रयास है कि अभियान के माध्यम से अधिक से अधिक पेंशनभोगियों को डिजिटल प्रक्रिया से जोड़ा जाए। इसके लिए रेलवे के कर्मचारी शिविरों में न केवल प्रमाणपत्र जमा कराने में मदद कर रहे हैं, बल्कि तकनीकी जानकारी के अभाव में आने वाली समस्याओं को भी दूर कर रहे हैं। वरिष्ठ नागरिकों को डिजिटल सेवाओं के उपयोग के प्रति जागरूक करना भी इस अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

धर्मराज पाण्डेय के जन्मोत्सव पर सुंदरकाण्ड पाठ एवं गोपूजन का भव्य आयोजन

आरएस नेटवर्क। प्रेम चौबे

नालासोपाराः मानव कल्याण शक्ति ज्योति फाउंडेशन (रजि. NGO) के संस्थापक एवं डायरेक्टर आचार्य पं. धर्मराज देवचन्द्र पाण्डेय का जन्मोत्सव 5 नवंबर 2026, गुरुवार को गोवत्स द्वादशी के पावन अवसर पर धार्मिक एवं भक्तिमय वातावरण में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर संस्था परिवार एवं गणमान्य अतिथियों ने विधि-विधान से गोमाता का पूजन-अर्चन किया। इसके पश्चात संस्था के जिला कार्यालय, शॉप नंबर 04, ओम साईं मिलन, ओसवाल नगरी, नालासोपारा पूर्व में शाम 5 बजे से भव्य सुंदरकाण्ड पाठ का आयोजन किया गया। संगीतमय सुंदरकाण्ड पाठ में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यक्रम में प्रभाग 10 के नगरसेवक प्रतिनिधि हरिकेश तिवारी एवं हितेश दुबे, गौशाला प्रमुख देवीकान्त पाण्डेय, राघवेंद्र सेवा मंच प्रमुख सुरेन्द्र मिश्रा, जय महाकालेश्वर सेवा फाउंडेशन की टीम, सत्यप्रकाश सिंह, रत्नाकर तिवारी, राहुल सिंह, अंकित मिश्रा,



धर्मेंद्र सिंह (धर्मी) की मानस गायक टीम, संतोषी मिश्रा, रजनी सिंह एवं हीरा पाण्डेय उपस्थित रहे।

इसके अलावा संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य पं. शिवदत्त पाण्डेय, वरिष्ठ पत्रकार एवं महायज्ञ-कथा समिति के अध्यक्ष प्रेम कुमार चौबे, भूपेश पाण्डेय, बागेश पाण्डेय, शशिकांत मिश्रा, जितेन्द्र दुबे, रोहित गुप्ता, सुरेश दुबे, सुनील मिश्रा, आशीष दुबे, पवन दुबे, प्रभाकर एवं पंकज पाण्डेय सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

जन्मोत्सव पर संस्था परिवार, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों एवं शुभचिंतकों ने आचार्य पं. धर्मराज देवचन्द्र पाण्डेय को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। आचार्य पाण्डेय ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मानवसेवा, गोसेवा, धर्म-संस्कृति के संरक्षण और जरूरतमंदों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य करते रहने का संकल्प दोहराया।

यह आयोजन व्यक्तिगत जन्मोत्सव तक सीमित न रहकर धर्म, आध्यात्मिकता, सामाजिक एकता, सेवा और भारतीय संस्कारों के प्रति समर्पण का प्रेरणादायी संदेश दे गया।

भिवंडी में दो युवक और एक युवती लापता, पुलिस में शिकायत दर्ज

भिवंडी। भिवंडी शहर के अलग-अलग इलाकों से दो युवक और एक 19 वर्षीय युवती के लापता होने के मामले सामने आए हैं। हनुमान नगर से 22 वर्षीय युवक, गुलजार नगर से 27 वर्षीय युवक और खाड़ीपार से 19 वर्षीय युवती के अचानक लापता होने से उनके परिजन चिंतित हैं। तीनों मामलों में संबंधित पुलिस थानों में शिकायत दर्ज कराई गई है।

पुलिस के अनुसार, हनुमान नगर निवासी मुजफ्फर शेख (48) का बेटा तसव्वर अली (22) 4 नवंबर की शाम करीब 6 बजे काम पर जाने की बात कहकर घर से निकला था, लेकिन वापस नहीं लौटा। परिजनों ने उसकी काफी तलाश की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। इसके बाद 5 नवंबर को भिवंडी शहर पुलिस स्टेशन में गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई गई।

दूसरी घटना में गुलजार नगर निवासी 27 वर्षीय युवक 4 नवंबर की सुबह करीब 5:30 बजे काम पर जाने के लिए घर से निकला था। इसके बाद वह घर नहीं लौटा। उसकी पत्नी और परिजनों ने रिश्तेदारों तथा परिचितों के यहां तलाश की, लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली। आखिरकार 6 नवंबर को शांतिनगर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई गई।वहीं, खाड़ीपार के अहमदनगर रोड इलाके से 19 वर्षीय युवती के लापता होने का मामला भी सामने आया है। युवती 4 नवंबर की सुबह करीब 8 बजे घर से निकली थी, लेकिन वापस नहीं लौटी। परिजनों ने शहर के विभिन्न इलाकों में उसकी तलाश की, लेकिन कोई पता नहीं चला। परिजनों ने किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा उसे बहला-फुसलाकर ले जाने की आशंका जताई है। इस मामले में 5 नवंबर को पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई है।तीनों मामलों में संबंधित पुलिस थानों ने शिकायत दर्ज कर लापता युवक-युवतियों की तलाश शुरू कर दी है।

सूखा प्रभावितों की मदद के लिए महावितरण के कर्मचारियों ने जुटाए 3.68 करोड़ रुपये

मुंबई। महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों में सूखे की गंभीर स्थिति के बीच प्रभावित किसानों और ग्रामीण परिवारों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से महावितरण के कर्मचारियों ने सामाजिक जिम्मेदारी की मिसाल पेश की है। राज्य के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में संकट का सामना कर रहे लोगों की सहायता के लिए महावितरण के अधिकारियों और कर्मचारियों ने स्वेच्छा से मुख्यमंत्री राहत कोष में 3 करोड़ 68 लाख 17 हजार 887 रुपये का योगदान दिया है। कर्मचारियों की ओर से एकत्र की गई इस बड़ी राशि का चेक शुक्रवार को मुंबई में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को सौंपा गया। मुख्यमंत्री ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि सूखे के कठिन दौर में महावितरण के कर्मचारियों ने जिस संवेदनशीलता और सामाजिक प्रतिबद्धता का परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है। उनकी यह आर्थिक सहायता प्रभावित क्षेत्रों के लोगों तक तत्काल राहत पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से उनके आवास पर हुई मुलाकात के दौरान ऊर्जा विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव आभा शुक्ला और महावितरण के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक लोकेश चंद्र ने राहत कोष के लिए 3,68,17,887 रुपये का चेक सौंपा। इस अवसर पर ऊर्जा राज्य मंत्री मेघना साकोरे बोर्डिकर, महापारेषण के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक विक्रम कुमार, महानिमति के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक राधाकृष्णन बी., महावितरण के निदेशक धनंजय औंधेकर, योगेश गडकरी, अनुदीप दिघे और राजेंद्र पवार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। महाराष्ट्र के कई क्षेत्रों में सूखे के कारण किसानों और ग्रामीण आबादी के सामने मुश्किलें बढ़ी हुई हैं। खेती-किसानी पर निर्भर परिवारों के लिए पानी की कमी और उससे पैदा होने वाली आर्थिक परेशानियां बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। ऐसे समय में राहत और सहायता की जरूरत को देखते हुए महावितरण के कर्मचारियों ने अपने स्तर पर योगदान देने का निर्णय लिया। इस अभियान की खास बात यह रही कि इसमें केवल वरिष्ठ अधिकारियों ने ही नहीं, बल्कि विभाग के विभिन्न स्तरों पर कार्यरत कर्मचारियों ने भी उत्साह के साथ भागीदारी की। फील्ड स्तर पर सेवाएं देने वाले वर्ग-एक के अधिकारियों से लेकर वर्ग-चार के कर्मचारियों तक ने अपनी इच्छानुसार आर्थिक सहयोग दिया। सभी के सामूहिक प्रयास से 3 करोड़ 68 लाख 17 हजार 887 रुपये की राशि एकत्र हुई, जिसे मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा कराने के लिए सौंपा गया। महावितरण का काम राज्य के लाखों उपभोक्ताओं तक बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना है। बिजली वितरण व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए इसके अधिकारी और कर्मचारी लगातार अलग-अलग क्षेत्रों में काम करते हैं। इस बार कर्मचारियों ने अपनी नियमित जिम्मेदारियों से आगे बढ़कर सूखा प्रभावित लोगों की सहायता के लिए आर्थिक योगदान दिया है। इस पहल को विभाग की सामाजिक जिम्मेदारी और जरूरत के समय समाज के साथ खड़े होने की भावना से जोड़कर देखा जा रहा है। खास तौर पर ग्रामीण इलाकों में रहने वाले किसानों और आम परिवारों के सामने मौजूद कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए यह सहायता मुख्यमंत्री राहत कोष के माध्यम से प्रभावित लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से दी गई है।

मोल्ड-टेक पैकेजिंग का मुनाफा 36% बढ़कर 21 करोड़ रुपये

MOLD-TEK Packaging Limited

मुंबई। मोल्ड-टेक पैकेजिंग लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2026-27 की दूसरी तिमाही में शानदार प्रदर्शन करते हुए शुद्ध मुनाफे में 36.06 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। कंपनी का मुनाफा बढ़कर 21.06 करोड़ रुपये हो गया, जबकि राजस्व 30.73 प्रतिशत बढ़कर 274.22 करोड़ रुपये और EBITDA 29.80 प्रतिशत बढ़कर 51.27 करोड़ रुपये पहुंच गया। पहली छमाही में कंपनी का शुद्ध मुनाफा 23.18 प्रतिशत बढ़कर 46.67 करोड़ रुपये रहा। कंपनी के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक जे. लक्ष्मण राव ने कहा कि कच्चे माल की कीमतों और उपलब्धता संबंधी चुनौतियों के बावजूद बेहतर मूल्य निर्धारण और परिचालन दक्षता से कंपनी ने मजबूत प्रदर्शन किया।

भिवंडी में कंपनी में अवैध मराठी फॉन्ट इस्तेमाल करने का मामला दर्ज

भिवंडी । भिवंडी के सरवली एमआईडीसी स्थित एक कंपनी में कथित तौर पर बिना अनुमति मराठी फॉन्ट का इस्तेमाल करने का मामला सामने आया है। इस मामले में कंपनी के मैनेजर के खिलाफ कॉपीराइट अधिनियम के तहत पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई है। पुलिस के अनुसार, शिकायतकर्ता असलम हुसैन अंसारी (62) एक निजी कंपनी में मुख्य जांच अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। उनकी शिकायत के आधार पर सरवली स्थित हनकोवा डिजिटल प्रिंट कंपनी के मैनेजर देवकुमार लक्ष्मीकांत चौधरी (29) के खिलाफ कार्रवाई की गई है।आरोप है कि कंपनी में अपने व्यावसायिक लाभ के लिए कंप्यूटर में मराठी फॉन्ट का कथित रूप से अनधिकृत इस्तेमाल किया जा रहा था। शिकायत के आधार पर पुलिस ने कंपनी से संबंधित सामग्री जब्त की, जिसमें एक हार्ड डिस्क भी शामिल है। जब्त सामग्री की कीमत करीब 4,500 रुपये बताई गई है।पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कॉपीराइट अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

कोलाबा के सरकारी कार्यक्रम में सांसद मिलिंद देवरा को नहीं मिला निमंत्रण

मुंबई। कोलाबा में सफाई कर्मचारियों को घरों की चाबियां सौंपने के लिए आयोजित सरकारी कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद मिलिंद देवरा को आमंत्रित नहीं किए जाने का मामला सामने आने के बाद राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में चर्चा शुरू हो गई है। दक्षिण मुंबई का प्रतिनिधित्व कर चुके पूर्व केंद्रीय मंत्री देवरा ने इस घटनाक्रम पर नाराजगी जताते हुए मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) आयुक्त अश्विनी भिड़े को पत्र लिखा है। उन्होंने पत्र के माध्यम से सरकारी कार्यक्रमों में निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन करने और संबंधित क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों को उचित सम्मान देने की मांग की है।

शुक्रवार को कोलाबा में मुंबई महानगरपालिका की आश्रय योजना के तहत सफाई कर्मचारियों को उनके घरों की चाबियां सौंपने का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे मौजूद रहे। इसके अलावा विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर, मुंबई की महापौर रितू तावड़े, उपमहापौर संजय घाड़ी सहित महानगरपालिका के विभिन्न दलों के नेता, जनप्रतिनिधि और वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान सफाई कर्मचारियों को घरों की चाबियां सौंपकर उन्हें आवास उपलब्ध कराने की पहल को आगे बढ़ाया गया।

हालांकि, इस आयोजन में राज्यसभा सांसद मिलिंद देवरा को आमंत्रित नहीं किया गया। देवरा दो बार दक्षिण मुंबई लोकसभा क्षेत्र से सांसद रह चुके हैं और केंद्र सरकार में मंत्री की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं। वर्तमान में राज्यसभा सदस्य होने के बावजूद उन्हें कार्यक्रम की सूचना या निमंत्रण नहीं मिलने पर उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया। इसके बाद उन्होंने बीएमसी आयुक्त को पत्र लिखकर अपनी आपत्ति दर्ज कराई।

देवरा ने अपने पत्र में कहा कि सरकारी योजनाओं और विकास परियोजनाओं से जुड़े कार्यक्रमों में स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भूमिका और उनके पद का सम्मान किया जाना चाहिए। ऐसे आयोजनों में संबंधित क्षेत्र के निर्वाचित प्रतिनिधियों को नियमानुसार आमंत्रित करना प्रशासन की जिम्मेदारी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सरकारी कार्यक्रम किसी एक व्यक्ति या संस्था तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे सार्वजनिक योजनाओं और नागरिकों से जुड़े होते हैं। इसलिए इनमें जनप्रतिनिधियों की भागीदारी और निर्धारित प्रोटोकॉल का ध्यान रखा जाना चाहिए।